अंक 31वां सितंबर 2020

# चेतना

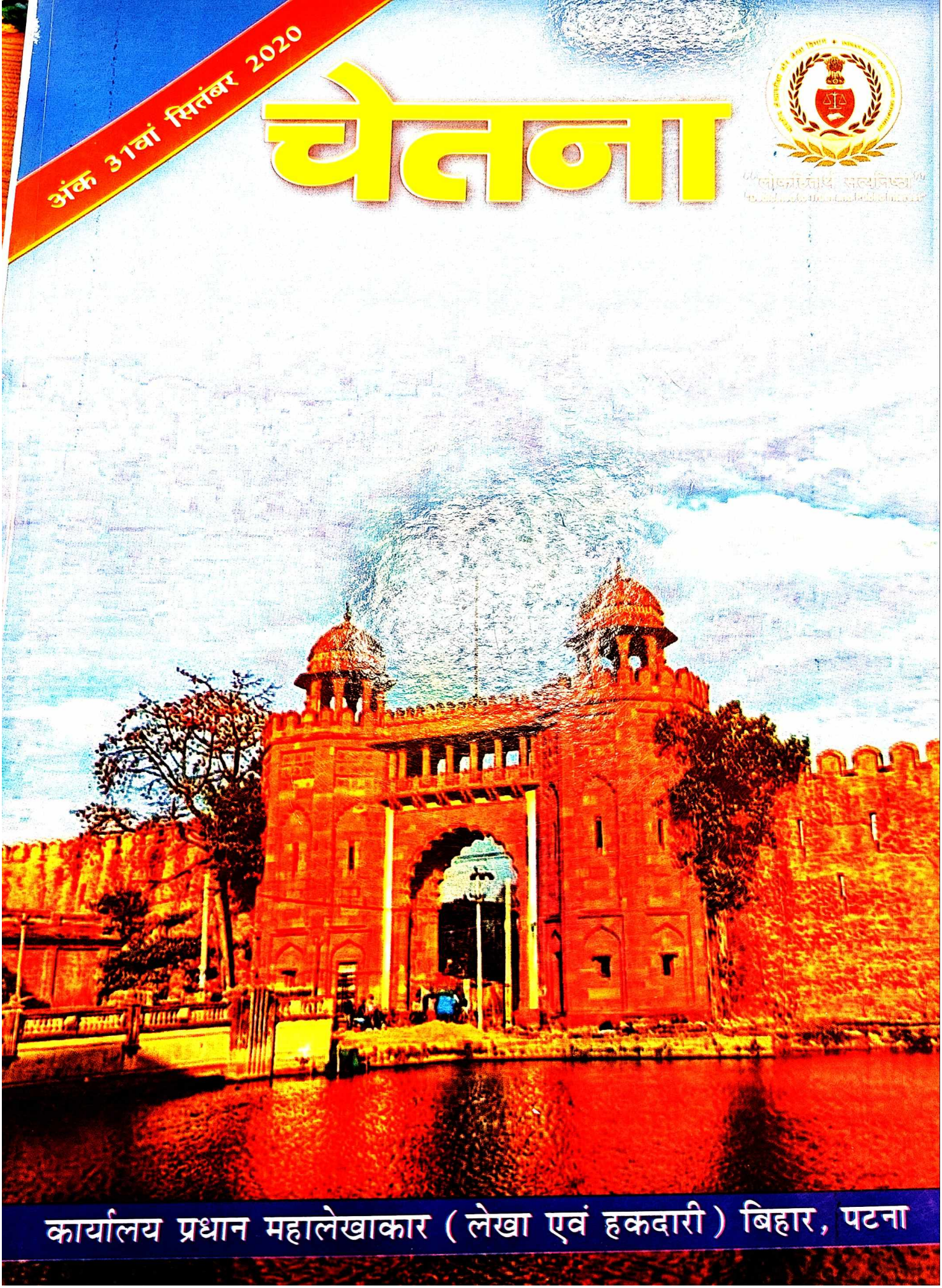

कार्यालय प्रधान महालेखाकार ( लेखा एवं हकदारी ) बिहार, पटना

Scanned with AnyScanner

# चेतना परिवार

बैठे हैं ( बायें से दायें ) श्री मुकेश कुमार लाल, वरीय उप महालेखाकार ( प्रशासन, जी0 ई0 एवं पेंशन )
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार ( लेखा एवं हकदारी )
श्री अभिषेक सिंह, उप महालेखाकार ( लेखा एवं भी. एल. सी. एवं कार्य )

खड़े हैं ( बायें से दायें ) श्री पवन कुमार, स0 ले0 अ0 -सह-सहायक संपादक
श्री श्रीराम पाण्डेय, स0 ले0 अ0 -सह-संपादक
श्री निरंजन प्रसाद, व0 ले0 अ0 -सह-प्रधान संपादक
श्री जितेन्द्र मल्होत्रा, व0 ले0 -सह-सहायक संपादक
श्रमती शिवानी चन्द्रा, क0 हि0 अनु0 -सह-सहायक संपादक
श्री अभिजित कुमार सिन्हा, स0 ले0 अ0 -सह-सहायक संपादक

Scanned with AnyScanner

सत्यमेव जयते

# चेतना

अंक–31वाँ (संयुक्तांक)

(अक्टूबर, 2019 से सितम्बर, 2020)

## त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

*31 वाँ अंक*

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना – 800001

चेतना के इस 31वें संयुक्तांक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

| | | |
|---|---|---|
| स्वत्वाधिकार | : | प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना |
| प्रकाशन | : | 'चेतना' |
| प्रकाशक | : | प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना –800001 |
| अंक–31वाँ | | (अक्टूबर, 2019 से सितम्बर, 2020) |
| मुख पृष्ठ | : | दरभंगा महाराज का किला |
| मूल्य | : | राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा |
| मुद्रक | : | जी0 बी0 प्रिन्टर्स, पटना |

Scanned with AnyScanner

# चेतना परिवार

संरक्षक
श्री प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,
श्री मुकेश कुमार लाल,
वरीय उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
श्री निरंजन प्रसाद
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री पवन कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री जितेन्द्र मल्होत्रा
वरीय लेखाकार

सहायक संपादक
श्रीमती शिवानी चन्द्रा
क० हि० अनुवादक



Scanned with AnyScanner

# अनुक्रमणिका


| क्र०स० | | |
|---|---|---|
| 1 | चेतना परिवार | ii |
| 2 | अनुक्रमणिका | iii |
| 3 | प्रधान महालेखाकार का संदेश | vi |
| 4 | वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश | vii |
| 5 | उप महालेखाकार (भी० एल० सी० एव कार्य) का संदेश | viii |
| 6 | सम्पादकीय | ix |
| 7 | प्रधान महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ वर्ष 2019–20 | xiii |

| क्रम सं० | रचना | नाम | पदनाम | रचना के प्रकार | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | भारत वन्दना | राजेश कुमार वाजपेयी | लेखाकार | कविता | 1 |
| 2. | श्री खलील | श्रीराम पाण्डेय | सहायक लेखा अधिकारी | कहानी | 2 |
| 3. | प्रभु की माया | अनिरूद्ध राय | सेवानिवृत पर्यवेक्षक | कहानी | 6 |
| 4. | जिदंगी | नायला समरीन द्वारा मो० आफताब अंसारी | वरीय लेखाकार | कविता | 8 |
| 5. | उम्मीद | आकांक्षा शिवानी पुत्री- श्री अजय कुमार सिन्हा, | व० लेखा अधिकारी | कहानी | 9 |
| 6. | कोरोना काल | भावेश कान्त वाजपेयी द्वारा राजेश कुमार वाजपेयी | लेखाकार | कविता | 11 |
| 7. | गिलोय (इम्यूनिटी बूस्टर) का उपयोग | ज्योति केशरी पत्नी-देव प्रकाश केशरी | वरीय लेखाकार | निबंध | 13 |
| 8. | शान की सवारी | धीरज कुमार | वरीय लेखाकार | निबंध | 14 |
| 9. | एक शिक्षक का मनोभाव (ऑनलाइन पढ़ाऊँगा) | रजनीश कुमार, द्वारा आशीष कुमार, | डी० ई० ओ० | कविता | 15 |
| 10. | बेचारा सिंड्रोम | सुमन संगम | वरीय लेखाकार | कहानी | 17 |
| 11. | संस्मरण | पिंकी कुमारी | स० ले० अ० तदर्थ | संस्मरण | 20 |




Scanned with AnyScanner

| क्रम सं० | रचना | नाम | पदनाम | रचना के प्रकार | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|---|
| 12. | गज़ल | राम सिंगार चौहान | सहायक लेखा अधिकारी | गज़ल | 21 |
| 13. | इर्ष्या, क्रोध और अपमान | ज्योति केशरी<br>पत्नी-देव प्रकाश केशरी | वरीय लेखाकार | कहानी | 22 |
| 14. | वो गलियाँ | अर्चना | वरीय लेखाकार | कविता | 23 |
| 15. | चाह मेरी बस इतनी है | मो० आफताब अंसारी | वरीय लेखाकार | कविता | 25 |
| 16. | तीन पुतले : लोक-कथा | कुमारी संगीता सिन्हा | वरीय लेखाकार | लोक कला | 26 |
| 17. | प्रेयसी बनाम कार्यालय | सुमन संगम | व० लेखाकार | गजल | 28 |
| 18. | दीवानगी | आभा झा<br>द्वारा- अविनाश ठाकुर, | स० ले० अ० | गजल | 30 |
| 19. | कोरोनासुर | संजय कुमार ओझा | वरीय लेखाकार | कविता | 31 |
| 20. | काल के गाल | अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय | वरीय लेखा अधिकारी | सामयिक निबंध | 33 |
| 21. | लेखनी | प्रतिमा कुमारी | वरीय लेखाकार | कविता | 43 |
| 22. | बूढ़े माता-पिता से उनके अधिकार मत छीनिये | संजीत कुमार | एम० टी० एस० | संदेश | 44 |
| 23. | फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था | चंदन कुमार | लेखाकार | कविता | 45 |
| 24. | स्वयं की उपेक्षा | देव प्रकाश केशरी | वरीय लेखाकार | कहानी | 46 |
| 25. | भोला की जटाओं में | बिधु शेखर | लिपिक | कविता | 47 |
| 26. | विश्वासघात | देव प्रकाश केशरी | वरीय लेखाकार | कहानी | 48 |
| 27. | सफर | अर्चना | वरीय लेखाकार | कविता | 49 |
| 28. | मुसकाते पेड़ | मो० शादाब<br>द्वारा मो० आफताब अंसारी | वरीय लेखाकार | कविता | 50 |
| 29. | प्यार में धोखा | कुमारी संगीता सिन्हा | वरीय लेखाकार | कहानी | 51 |
| 30. | हिन्द मंदीराज में | पूर्णेन्दु कुमार झा<br>द्वारा- अविनाश ठाकुर, | स० ले० अ० | कविता | 52 |




Scanned with AnyScanner

| क्रम सं० | रचना | नाम | पदनाम | रचना के प्रकार | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|---|
| 31. | सपनों की दुनिया | पिंकी कुमारी | स० ले० अ० तदर्थ | कहानी | 53 |
| 32. | बाढ़ की विभिषका | स्वाति सौरभ<br>सुपुत्री श्री उमेश चौधरी | वरीय लेखा अधिकारी | निबंध | 55 |
| 33. | जय भारत | श्रेष्ठा प्रभाकर<br>सुपुत्री- श्री उदय नारायण प्रभाकर | वरीय लेखाकार | कविता | 58 |
| 34. | एक श्रद्धांजली<br>स्वतंत्रता सेनानियों के नाम | अग्रिता प्रभाकर<br>सुपुत्री- श्री उदय नारायण प्रभाकर | वरीय लेखाकार | कविता | 59 |
| 35. | गज़ल | राम सिंगार चौहान | सहायक लेखा अधिकारी | गजल | 60 |
| 36. | सफलता की चाबी | आयुश शिवम्<br>द्वारा- श्री सुरेन्द्र लाल दास | वरीय लेखाधिकारी | कहानी | 61 |
| 37. | माँ की ममता | प्रियंका कुमारी<br>द्वारा चंदन कुमार | लेखाकार | कविता | 62 |




Scanned with AnyScanner

सत्यमेव जयते

# संदेश

हिन्दी हमारी मातृभाषा, राज्यभाषा और राजभाषा है। इसके पीछे युग और इतिहास ही नहीं, भारतीय जनता की विराट शक्ति भी है। भारत सरकार की यह सुविचारित नीति है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी तथा राज्यों के सरकारी कामकाज के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। वास्तव में इनका विकास और समृद्धि एक दूसरे पर निर्भर है। राजभाषा विभाग हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में व्यापक बनाने हेतु कृतसंकल्प है। अतः हमारा भी परम कर्त्तव्य है कि इस पुनीत कार्य में पूर्ण सहयोग करें। इन्हीं उद्देश्यों से अनुप्रेरित होकर हमारे कार्यालय से हिन्दी पत्रिका "चेतना" का प्रकाशन होता रहा है।

मुझे यह कहते हुए बेहद खुशी हो रही है कि पत्रिका का 31वाँ अंक हमारे सहृदय एवं सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे पढ़कर वे सृजनात्मक मेधा का भरपूर आनन्द लेंगे। साथ ही मैं उन समस्त रचनाकारों एवं पत्रिका के सम्पादक तथा परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को भी साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक बनाया है।

अन्त में मेरी यही मंगलकामना है कि इस कार्यालय में हिन्दी की यह सृजन-चेतना सतत अपनी रश्मि विखेरती रहे।

प्रवीण कुमार सिंह

शुभकामनाओं सहित।

प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार

Scanned with AnyScanner

सत्यमेव जयते

# संदेश

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 31वां अंक इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की गई है, जो कारगर साबित होता दिख रहा है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

मुकेश कुमार लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

Scanned with AnyScanner

सत्यमेव जयते

# संदेश

हिन्दी हमारे देश की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। चौदह सितंबर सन् उन्नीस सौ उनचास को भारत के राजभाषा के रूप में इसको मान्यता मिली। तभी से चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। यद्यपि इसका विकास एवं प्रचार-प्रसार उत्तरोत्तर हो रहा है, परंतु इसका प्रवाह बहुत ही संतोषजनक नहीं है। इसके लिये हमसब को मिलकर प्रयास करना चाहिये। हमें कोशिश करनी चाहिये कि हमारे कार्यालय में भी जहाँ तक संभव हो सके, काम-काज हिन्दी में ही किये जायें।

हमारे कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। इस पत्रिका का उद्देश्य है कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति अभिरूचि एवं रचनात्मकता बनी रहे। 'चेतना' में अपनी रचना देने के लिये सभी रचनाकारों को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इसके साजो-सज्जा, कलेवर एवं संपादन के लिये संपादक मंडल को भी साधुवाद।

जय हिन्दी।

अभिषेक सिंह

अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(लेखा, भी०एल०सी०एवं कार्य)

Scanned with AnyScanner

# सम्पादकीय

हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 31 वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरूचि सहित जागरूकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही किये जायेंगे। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर किया जायेगा।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने हिन्दी-प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय प्रधान महालेखाकार श्री प्रवीण कुमार सिंह तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद। पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है, तथापि यदि त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन कराने का अनुग्रह करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई देता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

श्रीराम पाण्डेय
(संपादक)



Scanned with AnyScanner

# पुरस्कार वितरण (वर्ष-2019)

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

| क्र. सं. | कार्यक्रम | श्रेणी | प्रतिभागियों के नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | निबंध प्रतियोगिता | प्रथम | श्री नृपेन्द्र कुमार नं–2 (स0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा) कार्यालय |
| | | द्वितीय | श्री सन्नी सिन्हा (स0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा) कार्यालय |
| | | तृतीय | श्री राजेश कुमार, (स0ले0अ0त0), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| 2 | प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण | प्रथम | श्री अंजनी कुमार (स0ले0अधिकारी), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| | | द्वितीय | श्री रंजीत कुमार, (स0ले0अ0त0), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| | | तृतीय | श्री देव प्रकाश केसरी (व0 ले0), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| 3 | बच्चों का काव्य पाठ | प्रथम | अराध्या सिंह, पुत्री–श्रीमती नीतु कुमारी (स0ले0अधिकारी), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| | | द्वितीय | आद्विक सिंह, पुत्र–श्रीमती नीतु कुमारी (स0ले0अधिकारी), (ले0 एवं ह0) कार्यालय |
| | | तृतीय | विवान श्रीवास्तव, पुत्र–श्री विश्वजीत श्रीवास्तव (वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी), (लेखापरीक्षा) कार्यालय) |
| 4 | कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता | प्रथम | रंजय कुमार शर्मा (लिपिक), (लेखापरीक्षा) कार्यालय) |
| | | द्वितीय | श्री शंकर लाल सिंह (व0लेखाकार), (ले0 एवं ह0 कार्यालय) |
| | | तृतीय | श्री रंजीत कुमार सिंह (डी0ई0ओ0), (ले0 एवं ह0 कार्यालय) |
| 5 | स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता | प्रथम | श्री श्याम दत्त मिश्रा (स0ले0प0अ0), (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | द्वितीय | श्री राजू कुमार सिंह (ले0प0अ0), (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | तृतीय | श्री के.एम.जयपुरियार (ले0प0अ0), (लेखापरीक्षा कार्यालय) |



Scanned with AnyScanner

| क्र. सं. | कार्यक्रम | श्रेणी | प्रतिभागियों के नाम |
|---|---|---|---|
| 6 | आशुभाषण प्रतियोगिता | प्रथम | भुवन भास्कर (व0ले0प0अ0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | द्वितीय | रंजीत कुमार कर्ण (स0ले0प0अ0त0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | तृतीय | मनोज कुमार नं.-6 (ले0प0अ0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| 7 | अनुवाद प्रतियोगिता | प्रथम | गौरव कुमार (व0ले0) (ले0 एवं ह0 कार्यालय) |
| | | द्वितीय | मनोज कुमार नं.-6 (ले0प0अ0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | तृतीय | सौरव कुमार झा (स0ले0प0अ0त0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| 8 | राजभाषा प्रतियागिता | प्रथम | श्री विकास कुमार सिंह नं.-1 (स0ले0प0अ0त0), (लेखापरीक्षा कार्यालय) |
| | | द्वितीय | श्री सन्नी सिन्हा (स0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा) कार्यालय |
| | | तृतीय | संयुक्त रुप से श्री राघव झा (व0लेखापरीक्षक) एवं रंजीत कुमार कर्ण (स0ले0प0अ0त0) (लेखापरीक्षा कार्यालय) |

Scanned with AnyScanner

## कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (ले0 व ह0), बिहार, पटना।
## हिन्दी गतिविधियाँ–2019–20

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:–

### 1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालनः

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2019–20 में कुल 1733 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें सभी हिन्दी/द्विभाषी में जारी किए गये। अंग्रेजी में जारी किए गये दस्तावेजों की संख्या शून्य रही।

### 2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2019–20 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,05,632 थी, जिनमें से 51,605 के उत्तर हिन्दी में दिए गये । शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही ।

### 3 राजभाषा कार्यान्वयन समितिः

वर्ष 2019–20 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गई, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार–विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

### 4 हिन्दी कार्यशालाः

वर्ष 2019–20 के दौरान इस कार्यालय में 6 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गई, जिनमें कार्यालय के 55 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

### 5 हिन्दी पुरस्कार योजनाः

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2019–20 के दौरान मूल हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस के अवसर पर नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

### 6 हिन्दी–पखवारा समारोह का आयोजनः

वर्ष 2019 में 01 सितम्बर, 2019 से 16 सितम्बर 2019 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत् आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ



Scanned with AnyScanner

यथा–निबंध–प्रतियोगिता, प्रारूप–लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, हिन्दी–अनुवाद प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य पर पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

## 7 हिन्दी शिक्षण योजनाः

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 117 अधिकारी एवं 564 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है । यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं । यहाँ 10 टंकक तथा 57 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 00 टंकक तथा 7 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

## 8 हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखनः

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है । वर्ष 2019–20 के दौरान इस कार्यालय में कुल 50,776 संचिकाऐं खोली गई, जिनमें 36,823 संचिकाओं में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई ।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है, जिसकी समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में की जाती रही है। आशा है, आगामी सत्र में भी लक्ष्यों की पूर्ति शत–प्रतिशत की जा सकेगी ।



Scanned with AnyScanner

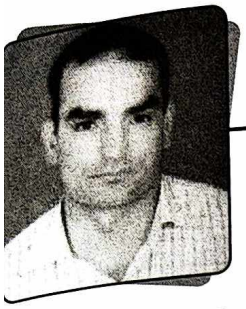

राजेश कुमार वाजपेयी
लेखाकार

# भारत वन्दना

स्वर्ग से सुन्दर, विश्व में बढ़कर,
देवभूमि यह भारत है।
तन–मन–धन हर क्षण है न्यौछावर,
मातृभूमि माँ भारत है।।

उज्जवल भाल विशाल हिमालय,
अन्तस्तल में माँ गंगा है।
जिसके पग–तल में सागर–तल,
कर में विजयी तिरंगा है।।

वही तपस्विनी, विभवशालिनी,
शांति–सुधामयी भारत है।
तन–मन–धन हर क्षण है न्यौछावर,
मातृभूमि माँ भारत है।।

जन–दुखहारिणी, अति सुखकारिणी,
शरण दायिनी देवी है।
मानवता की प्रतिमूर्ति सम
ज्ञान–सृष्टि–सर मौलि है।।

क्षमामयी जो दयामयी है,
ज्ञानभूमि यह भारत है।
तन–मन–धन हर क्षण है न्यौछावर,
मातृभूमि माँ भारत है।।

सत्य–अहिंसा के सौरभ से सुरभित,
जिसका अवनी–अम्बर है।
जहाँ राम की मर्यादा से,
मर्यादित हर घर–घर है।।

कर्मभूमि यह धर्मभूमि यह,
वेद भूमि यह भारत है।
तन–मन–धन हर क्षण है न्यौछावर,
मातृभूमि माँ भारत है।।



Scanned with AnyScanner

श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

# श्री खलील

इसे कहानी से ज्यादा सत्यकथा कहूँ तो ठीक रहेगा। परंतु सत्यकथा कहने से मन में एक भय या यूँ कहें कि घृणा-सी उत्पन्न होती है। सत्य कथाएँ, मनोहर कहानियाँ के नाम से जो पत्रिकाएँ आती थीं या शायद अब भी आ रही हों, उनके घिनौनेपन एवं छिछोरेपन से हमारे सुधि पाठक भलि-भाँति परिचित होंगे। इसलिये सत्यकथा होते हुए भी इसे कहानी ही रहने देता हूँ।

बात गाँव की है, जहाँ जमींदारी खत्म हो जाने के बाद भी कई महारथी अभी भी अपने को जमींदार से कम नहीं समझते। मोहन बाबू उन्हीं लोगों में से थे, ऐसा कहना शायद ठीक नहीं होगा। हाँ, जमीन इतनी थी और उस जमीन की देख-रेख के लिये इतने सेवकों की आवश्यकता पड़ती थी कि कभी-कभी जमींदारी का वह फ्लेवर उनमें भी दिखने लगता था। परंतु यदा-कदा की बातों को छोड़ दें तो मन एवं हृदय से वे जमींदार कतई नहीं थे। बड़े ही नेक एवं सहृदयता के धनी थे हमारे मोहन बाबू।

उनके खेतों के एक टूकड़े के बंटाईदार का नाम खलील है। निहायत ही ईमानदार, मेहनती और अपनी इच्छाओं को मारने वाला व्यक्ति शायद ही किसी ने देखा हो। खलील बांग्लाभाषी है। हिन्दी बोलने पर समझ तो जाता है, पर जवाब अपनी भाषा में ही देता है। वह मोहन बाबू को ठाकुर साहेब (जमींदारों एवं रईसों के लिये प्रयुक्त होने वाली उपाधि) कहता था। मेरे श्वसुरजी एवं मोहन बाबू में गहरी आत्मीयता थी और मैं जब भी ससुराल जाता, उनके यहाँ जाना ही पड़ता था। खलील मुझे जमाय ठाकुर कहता है। गाँवों में रिश्ता निभाने की अपनी एक शाश्वत परंपरा होती है, उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति उसी गाँव के किसी दूसरे व्यक्ति को दादाजी कहता था तो पहले व्यक्ति का पोता उस दूसरे व्यक्ति के पोता को आज भी दादा ही कहेगा। उम्र चाहे पोते की ही ज्यादा क्यों न हो।

मोहन बाबू के यहाँ जाने पर मेरा सबसे ज्यादा आवभगत खलील ही करता था। मुझे देखते ही मानो वह चहकने लगता। कई बार मुझसे अपने घर जाने का आग्रह करता, किसी कारण मैं जा नहीं पाता था। परंतु कब तक उस पुरातन संन्यासी के आग्रह को टाल पाता।

यह बताने की शायद आवश्यकता नहीं है कि खलील के घर जाने के बाद किस प्रकार मेरी आवभगत हुई होगी। हाँ, एक बात के लिये मेरे मन में आज भी मलाल है, उसके एक आग्रह को मैं स्वीकार न कर सका। खलील की पत्नी बड़े ही श्रद्धा से एक प्लेट में अंडा लेकर



Scanned with AnyScanner

आई और मुझसे खाने का आग्रह करने लगी। मैं निरामिष हूँ, यह बताने के बाद भी उन्हें विश्वास नहीं हुआ। वह लगातार आग्रह करती रही, जमाय ठाकुर, घरे डीम (अंडा) आछे, खाराब कोरबे ना। दोनों पति–पत्नी को बस यही लगा कि उनके अलग समुदाय का होने के कारण मैंने अंडा खाने से मना कर दिया होगा। परंतु वैसी कोई बात नहीं थी, ऐसा होता तो उनके घर में मैं कुछ भी न खाता।

गाँव के साधुजनों का आज भी कहना है कि जबसे खलील मोहन बाबू के खेतों की देखभाल करने लगा, खेतों की उपज में वृद्धि अनवरत होती गई। परंतु इस बात का तनिक भी गुमान खलील को नहीं था। बस अपने धुन में वह संन्यासी रमा रहता। केवल उसके बंटाई के हिस्से का ही नहीं, बल्कि मोहन बाबू के सारे खेतों में क्या लगाया जायेगा, बीज कहाँ से लाना ठीक होगा, सिंचाई कैसे होगी, इन सबको तय करने का काम खलील ही करता था। यूँ कहें तो एक तरह से वह उनके घर का, खासकर खेतों का मालिक ही था, केयर टेकर या मुंशी कहना मेरे हिसाब से सही नहीं होगा। इस कारण बाकी बंटाईदार उससे चिढ़े रहते थे। इसके बावजूद वह अपने धुन का मतवाला कभी भी मोहन बाबू से किसी अतिरिक्त या गलत लाभ की इच्छा नहीं रखता था। कहना नहीं होगा कि मोहन बाबू भी उसकी उतनी ही कद्र करते थे। खलील के बिना अपने होने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे वे।

यहाँ यह बता देना भी प्रासंगिक होगा कि उन दोनों की मित्रता से दोनों समुदायों के कुछ लोग चिढ़े हुए रहते और हमेशा इस ताक में लगे रहते कि कैसे उस मित्रता को दुश्मनी में बदल दिया जाये। परंतु उन महारथियों एवं उनकी लगाई–बुझाई की चिंता मोहन बाबू बिल्कुल नहीं करते। और वह सनकी मतवाला, वह कहाँ से करता। वैसे तो मोहन बाबू थोड़े धीर–गंभीर प्रकृति के थे, परंतु जिस दिन मुखर हो जाते, उस सच्चे–शर्मीले निर्बोध की तो जैसे शामत आ जाती। अरे स्सा.... तू मियाँ है न रे, फिर मेरे (एक हिंदू के) साथ मरने की क्यों सूझी तुझे। जो रे स्सा...। इसी प्रकार न जाने और किन–किन बातों से उसे चिढ़ाने का उपक्रम करते, परंतु इसमें सफल बहुत कम ही हो पाते थे। बहुत ज्यादा हो जाता तो भी खलील बस इतना ही बोलता था, ठाकुर साहेब एइटा बोलबे ना, ता ना होले आजकेर पर आमी आसबो ना। और उसका मुँह ही तो खुलवाना चाहते थे, मुग्ध हो जाते मोहन बाबू।

एक–दो बार इस वार्तालाप का रसास्वादन मैं भी कर चुका हूँ। पूछने पर बस इतना ही कहते कि इसका चिढ़ा हुआ चेहरा जरा देखना, लगता है कि कोई अबोध बच्चा तमतमाया हुआ है। यह बताते हुए उनकी आँखें गीली होना न भूलती थीं। बहुधा मोहन बाबू उसे श्री खलील कहकर पुकारते। इससे फर्क क्या पड़ना था, चाहे श्री लगा लें, मुहम्मद कह लें या बिना किसी उपाधि के ही पुकार लें, रमता जोगी बहता पानी। उन दोनों देवदूतों–निर्विकार योगियों के



Scanned with AnyScanner

अमृतघट को पीने के लिये मैं अब अत्यधिक लालायित रहता और जब भी मौका मिलता, किसी न किसी बहाने ससुराल पहुँच जाता।

परंतु हर कहानी की तरह इस कहानी का भी उपसंहार तो होना ही था। समय का चक्र धीरे–धीरे अपनी परिधि पर घुमता रहा, मोहन बाबू और वह निर्निमेष साधु दोनों बूढ़े हो गये। खलील का शरीर अब साथ नहीं दे रहा था। मोहन बाबू के काफी आग्रह एवं उसके बाद उनके क्रोधित होने पर भी वह अब उनके यहाँ रहने के लिये तैयार नहीं था– ना ठाकुर साहेब, आमी आर काज कोरते पारछी ना। आपनी जतई बोलुन, काज कोरते ना पेरे आमी एखाने थाकबो ना। बिना कर्म किये किसी के यहाँ एक लोटा पानी भी नहीं पी सकता था वह प्रस्तर तपस्वी, चाहे उसके सबसे अपने मोहन बाबू ही क्यों न हों। यद्यपि यदा–कदा वह मोहन बाबू के घर आता रहा, पर अब बंटाईदार का काम उसके बेटे करने लगे। मोहन बाबू के बेटे भी अब बड़े हो गये थे एवं उनके सारे कारोबार स्वयं संभाल चुके थे। बेटे अपने पिताजी से ज्यादा होशियार और प्रैक्टिकल हो गये थे। उन्हें लगता कि खलील पिताजी के भलमानसी या यूँ कहें कि उनकी बेवकूफी का फायदा अवश्य उठाया होगा। इस कारण वे काफी सतर्क हो गये थे एवं खेतों की बुआई, जुताई आदि का काम अपने हाथ में ले लिये।

उधर जो नेमत ईश्वर ने खलील को दी थी, उसके बेटों में न रही। मेहनत वे भी बखुबी करते, परंतु उसी प्रकार ज्यादा लाभ की आशा भी करते। फलतः कभी–कभी अपना यह अधिकार समझकर कि जो मेहनत करता है, उपज का ज्यादा हिस्सा भी उसे ही मिलना चाहिये, फसल में से कुछ अन्न निकाल कर रख लेते। इसकी जानकारी किसी न किसी तरह मोहन बाबू के बेटों को मिल जाती और फिर इसके बाद क्या होता होगा, कल्पना किया जा सकता है। जो मोहन बाबू कभी खलील को आँख कड़ा करके भी नहीं देखे थे, उनके बेटे अब गाली–गलौज पर उतर जाते। खलील के बेटे भी उसी प्रकार गाली से ही उसका प्रत्युत्तर देते। मोहन बाबू और खलील दोनों को जब उक्त बातों की जानकारी होती, समझाने का भरसक प्रयास करते, परंतु उसका कोई असर न मोहन बाबू के बेटों पर होता, न खलील के बेटों पर। तब अपनी लाचारी पर दोनों खुब रोते। इससे ज्यादा वे अमिट मित कर भी क्या सकते थे।

बाद में खलील के बेटों को बंटाईदार के काम से हटा दिया गया, खलील का भी वहाँ आना बंद हो गया। वह अभिन्न देवदूत अब अपने मित्र, अपने मालिक से भिन्न हो चुका था। इस बात का बहुत बुरा असर मोहन बाबू पर हुआ, दिमागी रूप से कमजोर होते चले गये और अंततः डिमेंशिया (अलजाईमर्स) के शिकार हो गये। अब वे किसी को भी नहीं पहचान पाते थे। मैं भी मिलने गया तो नहीं पहचान सके। मेरे याद दिलाने पर इतना ही बता पाये कि शायद पहले भी कभी तुम मेरे यहाँ आये हो। उस बलिष्ठ–सहृदय व्यक्ति को इस हाल में



Scanned with AnyScanner

देखकर मैं बस ताकता रह गया। खलील की याद दिलाकर मैं उम्मीद की आखिरी किरण को जगाना चाहता था, न जाने कहीं कोई चमत्कार हो जाये। लेकिन परिवार द्वारा यह कहकर पहले ही मना कर दिया गया था कि डॉक्टर ने ऐसा करने से मना किया है एवं इससे उनकी तबियत और भी ज्यादा बिगड़ सकती है।

खलील का वहाँ आना पहले ही बंद हो गया था। इस कारण मोहन बाबू की बिमारी का उसे कुछ भी पता न चला। धीरे-धीरे मोहन बाबू की स्थिति और भी बिगड़ती चली गई। खाना-पीना छूट गया, कमजोर होते चले गये। फिर चलना-फिरना भी पूरी तरह बंद हो गया।

इसी बीच जब मैं खलील से मिलने जाने की सोच रहा था, पता चला कि वह हज करने मक्का गया था एवं लौटने के बाद अपने गाँव के कथित बुद्धिजीवियों के आगे नतमस्तक होकर मजहबी हो गया था। अब दूसरे समुदाय के लोगों से उसे नफरत-सी हो गई थी। और उस दूसरे समुदाय के लोग भी तो इस बात से फूले नहीं समा रहे थे। हे ईश्वर, तुने यह क्या कर दिया!

जब यह खबर मुझे मिली कि मोहन बाबू अपने जीवन की आखिरी सांसें गिन रहे हैं, मुझसे रहा न गया और मैं उन्हें देखने चला गया। परिवार के सभी लोग उन्हें घेरकर बैठे हुए थे। उन सबके साथ मैं भी उन्हें मरता हुआ देख रहा था। परंतु अरे, यह क्या! देखता हूँ तो धवल दाढ़ी, धवल बालों से सुसज्जित कोई देवदूत लाठी खटखटाते हुए चला आ रहा है।

फिर वह मजहबी एक हाथ से उनके मुँह में गंगाजल-तुलसी पत्र देते हुए तथा दूसरे हाथ से अपनी आँखें पोछते हुए अपुष्ट स्वरों में बड़बड़ा रहा है, ठाकुर ओठो, जोल खाओ, चोख खोलो, तोमार श्री खलील एसेछे (उठो ठाकुर, पानी पीओ, आँख खोलो। तुम्हारा श्री खलील आया है)।



Scanned with AnyScanner

अनिरूद्ध राय
सेवानिवृत पर्यवेक्षक

# प्रभु की माया

एक धनपतगढ़ नामक शहर था। जिसमें सेठ गनपत लाल रहते थे। उनकी शादी गायत्री दे नाम की लड़की से हुई थी। सेठ जी के पिताजी का कारोबार कपड़े का था। जिनका नाम सेठ रामला था। रामलाल जब बूढ़े हुए तो दुकान का काम–काज उन्होंने अपने बेटे सेठ गनपत लाल को सौंप दुकानदारी के काम से संन्यास लेकर भगवत –भजन करने लगे।

सेठ रामलाल भगवान के बहुत बड़े भक्त थे। उनके घर में लक्ष्मी का साक्षात वास था। वे साधु, संतों का आदर करते थे। समाज में उनकी बहुत इज्जत होती थी। दान, पूण्य, साधु, सेव तीर्थों की यात्रा उनके दैनिक कार्यों में सम्मिलित था। वे त्रिकाल पूजा करते थे। घर में माँस–मदि तथा किसी भी प्रकार का नशा सेवन कोई नहीं करता था। यहाँ तक कि घर का नौकर रामू काका भ घर में लहसून, प्याज का भी व्यवहार नहीं करते थे। अर्थात पूरा परिवार पूर्ण रुप से वैष्णव था। घ में एक छोटा सा मंदिर था, जिसके राम राजा सकरकर माँ जानकी संग विराजमान थे। पंडित शंक दयाल दूबे जी दोनों समय उनकी आरती तथा भोग लगया करते थे। सेठ जी पूर्ण भगवत भजन मे लगे रहते थे।

पिता का पूर्ण प्रभाव पुत्र सेठ गनपत लाल तथा पतोहू गायत्री देवी पर पड़ा था। पड़ेगा क्यों नहीं, क्योंकि घर का माहौल तो पूजा तथा भगवत भजन से हरदम गूंजता रहता था। अतः घर मे शान्ति थी। इसीलिए घर में लक्ष्मी माता का वास थ।

सेठ जी को लड़का था जिसका नाम धर्मप्रकाश था। वह देखने में बहुत सुन्दर, सुशील तथा तीव्र बुद्धि का था। सभी शिक्षक उससे खुश रहते थे। समाज में भी समाज के लोग उसका आदर करते थे। क्योंकि वह नम्र तथा मितभाषी था। पढ़ लिखकर वह योग्य पुत्र बन गया। सेठ गनपत लाल भी बूढ़े हो गए थे। इसलिए उन्होंने अपना कारोबाड़ पुत्र धर्मप्रकाश को सौंप दिया तथा काम से अवकाश लेकर भगवत भजन में लग गए। एक दिन पत्नी गायत्री ने कहा कि लड़का अब सयाना हो गया है और मैं भी अब बूढ़ी हो गई हूँ। अतः कोई योग्य लड़की देखकर धर्मा की शादी कर दिया जाए। सेठ जी ने शादी करते की अनुमति प्रदान कर दी।

एक दिन सेठ गनपत लाल दरवाजे पर उनके गुजरात वाले सेठ आए जिनके पास से इनके यहाँ कपड़ा वगैरह आता था। जिसे लाने तथा करने धर्मा भी कभी–कभी जाया करता था। सेठ गनपत लाल गुजरात वाले सेठ का आदर–सत्कार किया तथा गेस्ट रुम में आराम करने के लिए कहा कि यात्रा से आ रहे है थकान होगी, थोड़ा आराम कर लिया जाए।

शाम में सेठ गनपत लाल सेठानी गायत्री नाश्ता, चाय के साथ पास गए। कहा कि नाश्ता कर चाय पीया जाय। चाय पीने के बाद घर परिवार की बात चल निकलीं तो सेठ मुरारी लाल ने कहा कि मेरी लड़की कामिनी शादी लायक हो गई है। गायत्री देवी ने कहा कि योग्य लड़का देखकर शादी कर दीजिए। मेरे रिश्तेदारी में भी दो लड़के हैं। कहिए तो बात करुँ। सेठ मुरारी ने कहा कि मै तो लड़का देख परख लिया हूँ। वही तो बात करने आया हूँ। सेठ गनपत लाल ने कहा कि ठीक है तो गाड़ी निकलवा दूँ, चला जाए। तो मुरारी लाल ने कहा कि कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। लड़का तो र में ही है। मैं धर्मा से कामिनी की शादी करना चाहता हूँ। इसीलिए ही यहाँ धनपतगढ़ आया हूँ।



Scanned with AnyScanner

यह सुनने के बाद से गनपत लाल ने पत्नी गायत्री की तरफ देखा। गायत्री अपने पती से कामिनी की सुन्दरता तथा स्वभाव के बारे में सुन चुकी थी। अतः उसने भी शादी की हामी भर दी समय पर धर्मा तथा कामिनी की शादी बड़े ही धूम-धाम से हुई। घर और बढ़िया से चलने लगा। कुछ दिनों तक तो घर तथा दुकान का काम बढ़िया से चला। इधर सेठ गनपत एवं गायत्री भी बूढ़े हो चले थे तथा घर का कोई काम नहीं करते थे। आगे के कमरे में बैठकर टी०बी० देखते या अखबार पढ़ते रहते थे। खाँसी होने पर खाँसते रहते। इससे कामिनी की सखी सहेलियों के आने मर उसे दिक्कत महसूस होने लगी।

यह बात उसने धर्मा को बताई तो उस समय तक धर्मा भी अपनी पत्नी के वश में पूरा हो गया था। पत्नी की किसी भी बात का विरोध न करके पत्नी की हाँ में हाँ मिलाया करता था। उसने भी कहा कि ये बूढ़े-बूढ़ी पुराने विचारों के है तथा इनमें जरा भी नये जमाने की बात का अहसास नहीं है। ये तो ड्राइंग रुम में अजगर जैसा कुंडली मारकर बैठ गए हैं। हटते ही नहीं।

फिर दोनों ने विचार किया कि इनलोगों के ही चलते खाना पीना भी मुहाल हो गया है। खाने पीने के लिए पार्टी करने के लिए होटल जाना पड़ता है। यदि ये दोनो यहाँ से हट जाए तो हमलोग फ्री होकर अपने ढ़ंग की जिन्दगी जी सकेंगे।

दोस्तों से सलाह लेने पर उनलोगों ने कहा इनलोगों को वृद्धाश्रम में पहूँचा दीजिए। खर्चा वही भेजते रहिए। दोनों को यह बात पसंद आई और दोनों ने सेठ गनपत तथा सावित्री का बात बताई। सेठ गनपत ने कहा जैसी "प्रभु की माया" जो अच्छा लगे करो मुझे कोई एतराज नहीं है। क्या करना मुझे कोई एतराज नहीं है। क्या करना है। भगवत भजन प्रेम पूर्वक होगा। कोई चिन्ता फिकर नहीं करना है।

लेकिन सावित्री तो रोने लगी तथा बोली मैं घर छोड़कर बाहन नहीं जाऊँगी। वहाँ पोता-पोती नहीं होगा कोई देखभाल वाला नहीं होगा।

लेकिन पती के समझाने पर वह भी मान गई। और समय नियत किया गया कि दोनों पिता एवं माता को इस तिथी को इन्हें घर से निकालकर वृद्धाश्रम गए तो उनलोगों ने देखा कि पिताजी एवं माँ दोनों प्रसन्न मुद्रा में मैनेजर संग बैठकर आराम से बात कर रहे हैं तथा हँस रहे हैं। सामने एक पुरानी बही खोलकर रखी गई है।

पुत्र ने आश्चर्य में पड़कर मैनेजर से पूछा कि पिताजी बहुत प्रसन्न है इन्हें यहाँ दुःख नहीं है घर पर तो बहुत से सुख में थे। मैनेजर ने ना कहा।

लड़की से बताया कि देखिए सेठ जी ने आज से पच्चीस वर्ष की बही मंगया है तथा कह वि आज से 25 वर्ष पूर्व थे यहाँ आए थे और एक बच्चा गोद लिया था देखिए उसका नाम भी अंकत है लड़के ने देखा कि नााम की जगह पर धर्मप्रकाश लिखा है। लड़को को माजरा समझ में आया तो उस मैनेजर की तरफ देखा, उसने हाँ में सिर हिलाया और कहा कि सेठ जी इस अनाथ से सनाथ बनाय उसी ने मुझे सनाथ से अनाथ बना दिया और उसने मुझे अनाथालय पहुँचा दिया। तथा कही कि य प्रभु को मंजूर था। यही प्रभु की माया कहलाती है।

साथ ही मैनेजर ने एक रहस्योदघाटन किया कि इन्हीं सेठ जी ने इस अनाथालय/ वृद्धाश्रम बनाया है तथा प्रमुख ट्रस्टी है उसमें इन्होंने धन्नागुर्जर के नाम से रुपया जमा करया है। पैसा करते थे लेकिन नाम नहीं चाहते थे। और एक आप है कि ऐसे धर्मातम पिता/ माता को घर से नि दिए। जिसने आपको घर दिया, अपना नाम दिया। अपना दिया उसे ही आपने उनके धन से बे कर दिया।

इतना सुनकर लड़का जोर-जोर से रोने लगा और उसने कहा कि मुझसे बड़ी गलती ह इसका कोई प्रायश्चित नहीं है। और उसी समय माँ-पिता को लेकर घर चला गया।



Scanned with AnyScanner

नायला समरीन
द्वारा मो० आफताब अंसारी
वरीय लेखाकार



दो पल की जिंदगी है
आज बचपन, कल जवानी,
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है।

चलो हँस कर जिए, चलो खुलकर जिए
फिर ना आने वाली यह रात सुहानी,
फिर ना आने वाली यह दिन सुहानी।

कल जो बीत गया सो बीत गया
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता,
आज और अभी जिओ, दूसरा पल हो ना हो।

आओ जिंदगी को गाते चले,
कुछ बातें मन की करते चलें,
रुठों को मनाते चले।

क्या लाए थे, क्या ले जायेंगे,
आओ कुछ लुटाते चले।
आओ सब के साथ चलते चले,
जिंदगी का सफर यूँ ही काटते चले।

आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखते चले,
कुछ बोल मीठे बोलते चले।



Scanned with AnyScanner

आकांक्षा शिवानी
पुत्री- श्री अजय कुमार सिन्हा,
व० लेखा अधिकारी



समता सर्वभूतेषु एतद् मुक्तस्य लक्षणम्।

वैसे तो भारत में जाति के आधार पर अंतर करना अपराध है तथा इसे रोकने के लिए कई सख्त कानूनी नियम हैं।

अनुच्छेद 15 का नियम 2 कहता है– "किसी व्यक्ति को धर्म, जाति, जन्म और लिंग के आधार पर दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों, सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों, कुओं, तालाबों, स्नान घाटों, सड़कों में जाने से नहीं रोका जा सकता है।"

काश इस अनुच्छेद के इस नियम में एक और स्थान का जिक होता "मन"। कानून के डर से लोगों ने इन जगहों पर तो भेदभाव करना "कम" कर दिया, "बंद" नहीं। पर आज भी विचारों में उतनी ही "संकीर्णता" है। हम इन अपराधी मानसिकताओं को रोकने में असमर्थ हैं।

दो साल पहले की बात है। हमारे घर के समीप में ही शैलेश चाचा का परिवार रहता था। मेरे पिताजी और उनकी घनिष्ठ मित्रता थी। किंतु हमारे ही पड़ोस के कुछ शिक्षित वर्ग उनसे बात करना अनुचित समझते थे। उनका तर्क था कि वे निम्न जाति के हैं। उनके इकलौते पुत्र "रुद्र'' मेधावी छात्र थे। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और कठोर परिश्रम के आधार पर अपना दाखिला देश के एक प्रतिष्ठित "सरकारी मेडिकल कॉलेज" में करवा लिया था। वहीं कुछ शिक्षित वर्ग और उच्चजाति के नाम पर भेदभाव करने वाले लोगों की संतान ने रिश्वत के बल पर अपना नामांकन "निजी कॉलेज" में करवा कर उन लोगों का मान बढ़ाया था। भैया हमेशा कहते हैं :–

उद्यमेनैव सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न ही सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

वास्तविकता में चाचा जी के संस्कार और विचार उच्च कोटि के थे। यह उनकी संतान ने सिद्ध कर दिखाया था। चाचा जी कहते थे कि वे स्वयं चिकित्सक बनना चाहते थे, किंतु उन्हें विवशताओं के सामने घुटने टेकने पड़े। पर उन्हें विश्वास था कि ईश्वर के घर देर है, अंधेर नहीं। आज उनका बेटा उस मुकाम पर है, जहाँ पहुँच पाना अत्यधिक परिश्रम से ही संभव होता है। उन्होंने अपनी सुख सुविधाओं का त्याग करके ऋण लेकर अपने बेटे को पढ़ाया है। रुद्र मेरा मान बढ़ाएगा। चाची जी ने बताया भैया कहते हैं कि डॉक्टर बनने के बाद वह उन्हें एक बड़ा घर दिलवाएंगे। उनका अपना घर। उन्हें वह दोनों स्कूटर पर अच्छे नहीं लगते। वह एक बड़ी गाड़ी खरीदेंगे।

भैया छुट्टियों में घर आए। किंतु एक चीज ने सबका ध्यान आकृष्ट किया उनकी तरफ और वह थे उनके बहुत अजीब तरीके से कटे हुए बाल। पड़ोस के कुछ बच्चों ने तो उन्हें हास्य का विषय बन लिया। उनकी माँ ने जब उनसे इस विचित्र रुप का कारण पूछा तो उन्होंने नया फैशन बता दिया उनके जाने के कुछ दिन पश्चात चाची, माँ से मिलने आई और माँ को बताया कि रुद्र भैया व्यवहार में बदलाव आ गया है। वे अब उन्हें फोन भी नहीं करते। माँ ने उनसे कहा कि शायद पढ़



Scanned with AnyScanner

के कारण इतनी व्यस्तता आ गई होगी या परीक्षाओं की चिंता होगी।

चाची ने गर्व और आत्मविश्वास से कहा–मेरे बेटे को डर, वह भी परीक्षाओं का, ऐसा हो ही नहीं सकता। अकस्मात् एक सप्ताह बाद हमने चाचा–चाची को जल्दबाजी में कहीं जाते हुए देखा। पिताजी ने उन्हें रोकना उचित न समझा, शायद कुछ महत्वपूर्ण हो। कुछ दिन बाद हमें उनके रिश्तेदार से पता चला कि रुद्र भैया ने परीक्षा में फेल होने के भय से आत्महत्या कर ली है। कुछ दिन बाद चाचा और चाची जी वापस आ गए। उनकी मुख की आभा–शोभा सब विलुप्त हो चुकी थी। उनके हाथ में रुद्र भैया की कुछ किताबें थी। शाम को चाचा जी रोते हुए आए और कहने लगे, मैंने कहा था न कि मेरा बेटा कायर नहीं था। वे जोर से विलाप करने लगे और नीचे गिर गए। मेरे पिताजी कुछ कहते, उससे पहले उन्होंने भैया की डायरी पिताजी को दे दी। उससे कुछ यूँ लिखा था – लोग अच्छे नहीं है और मेरी जाति के आधार पर मेरा अनादर करते हैं। जब मैं इनसे अधिक अंक लाता हूँ तब यह मुझे बहुत मारते हैं और जब मैंने यह बात प्रोफेसर साहब को बतानी चाही तब इन लोगों ने मुझ पर चोरी का इल्ज़ाम लगाकर मुझे निष्कासित करवा दिया। मैं पढ़ना चाहता हूँ। मैं पढ़ नहीं पा रहा। क्या करुँ ? मैं कुछ दिन पहले अपने घर छुट्टी मनाने नहीं गया था बल्कि मुझे निष्कासित कर दिया गया था। माँ–पिताजी को कैसे बताऊँ ? मुझे भय है कि ..... । उसके आगे के पन्ने फटे हुए थे मानो साक्ष्य मिटा दिए गए हों, परंतु चुनौती देने कि लिए आधा सत्य जान बूझकर उजागर किया गया था। चाचा जी लड़ाई लड़ना चाहते थे, परंतु उनके पास पर्याप्त साधन नहीं थे और जब साधन मिल गए तो साक्ष्य नहीं रहे।

बचपन में बच्चे अकसर कुछ ऐसी गलतियाँ कर देते हैं जो बड़े होने पर अपराधी मानसिकताओं को जन्म देती है, उन्हें अपराधी बनाती है। उन्हें कुरीतियों का विरोध करना सिखाऐं समर्थन करना नहीं। यह आग में घी का काम करती है। मेरा देश विकास की राह पर है, परंतु यह भी एक कटु सत्य है कि विकास के साथ विनाश (अपराध) की भी बढ़ोत्तरी हो रही, जिसमें बालिग और नाबालिग दोनों की भागीदारी समान होती है। हमें उस मानसिकता को रोकना है जो उज्जवल भविष्य पर ग्रहण लगा रहा। वैसे भी शास्त्रों में कहा गया है–––

परोपकारः पुण्याय

पापाय परपीड़नम्

तो फिर हम यह पाप क्यों करें ? वास्तविकता तो यह भी है कि जाने अनजाने हम सब भी इन कुरीतियों का समर्थन करते हैं। इसे बंद करना होगा, प्रश्न करना होगा खुद से ताकि दोबारा कोई रुद्र न मरे, ताकि किसी की उम्मीदें खत्म न हो।

स्वच्छ भारत

गलत मानसिकताओं से मुक्त भारत।



Scanned with AnyScanner

भावेश कान्त वाजपेयी
द्वारा राजेश कुमार वाजपेयी
लेखाकार

# कोरोना काल

भँवर जाल में, विश्व फँसा है,
ठहर गई है दुनिया।
चाहे इटली, चीन, अमेरिका,
फ्रांस, मिश्र या केनिया।।

भारत देश भी नहीं अछूता,
इस भँवर के जाल से।
जीवन को जो लाश बनाता,
बहुरुपिया कोरोना काल से।।

टप-टप विष टपक रहा है,
डबल बीस के साल से।
लगता पाप घड़ा का फूटा
सौ बरसों की चाल से।।

भौतिकता ने नैतिकता की,
गर्दन मरोड़ दिया है।
भारत देश की अमूल्य सम्पदा को,
इसने झकझोर दिया है।।

कितनी पूण्य भूमि है अपनी,
देवभूमि माँ भारत है।
देवालय सब बंद पड़े हैं,
शायद ईश्वर भी आहत हैं।।

मंदिर के पट बंद पड़े हैं,
बाहर सिपाही का पहरा।
पहर-पहर पर कहर बरसता,
लगता जग कर्मो से हारा।।



Scanned with AnyScanner

गंगाधर हिमवान विशाल में,
पड़े-पड़े हूँकार रहे।
हिम नदियाँ, क्यों हो मैली,
पर्यावरण बिगाड़ रहे।।

प्राचीनतम संस्कृति हमारी,
सबल-प्रबल अपनाना होगा।
वही वर्ग की चाल-टाल कर,
खुशहाल करेगी दुनियाँ।।

भँवर जाल में विश्व फँसा है,
ठहर गई है दुनियाँ।
चाहे इटली, चीन, अमेरिका,
फ्रांस, मिश्र या केनिया।।

Scanned with AnyScanner

ज्योति केशरी
पत्नी-देव प्रकाश केशरी
वरीय लेखाकार

# गिलोय (इम्यूनिटी बूस्टर) का उपयोग

वर्तमान समय कोरोना (कोविड-१९) काल में गिलोय का उपयोग अत्यधिक हो रहा है। यह इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में भी काम करता है। गिलोय बुखार के लिए रामबाण है। इसलिए इसके आयुर्वेदिक गुण के लिए इसे जीवन्तिका भी कहा जाता है। आयुर्वेद में इसका इस्तेमाल कई बीमारियों के लिए किया जाता है। बरसात के मौसम में होने वाली वायरल बीमारियों मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया में गिलोय का सेवन किया जाता है. मच्छर से होने वाली बीमारियों में यह काफी फायदेमंद है।

## गिलोय के गुण, सेवन, लाभ/नुकसान

गिलोय का इस्तेमाल अक्सर बुखार में किया जाता है। बुखार के अलावा इसका उपयोग कई औषधीय गुण के लिए भी किया जाता हैं। डेंगू में गिलोय का सेवन प्लेटलेट्स कम होने पर किया जाता है, जिससे प्लेटलेट्स बढ़ाने में काफी मदद मिलती है। इसके अलावा गठिया रोग के लिए भी यह बहुत फायदेमंद होता है। यह डायबिटीज मरीज को ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मदद करता है।

बुखार में गिलोय का सेवन पाउडर, काढ़ा या रस के रूप में किया जाता है। इसके पत्ते और तने को सुखाकर पाउडर बनाया जाता है। वहीं बाजार में गिलोय की गोली भी मिलती है। गिलोय का एक दिन में 1 ग्राम से ज्यादा इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। गिलोय का इस्तेमाल हर मौसम के लिए अच्छा नहीं होता है. आयुर्वेद में गिलोय की तासीर को बहुत ही गर्म बताया गया है। इसीलिए सर्दी-जुकाम और बुखार में यह लाभकारी होता है। गिलोय का सबसे अधिक सेवन बुखार में किया जाता है। हमेशा जवां बने रहने के लिए भी गिलोय का सेवन किया जाता है।

गिलोय का इस्तेमाल पाचन तंत्र को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। डायबिटीज के रोगी को ब्लड शुगर कम करने के लिए गिलोय खाना फायदेमंद होता है। इसका इस्तेमाल डेंगू में ब्लड प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए किया जाता है। वजन कम करने में गिलोय का जूस काफी लाभकारी होता है। आयुर्वेद विशेषज्ञ का मानना है कि 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को गिलोय का सेवन नहीं करना चाहिए। गिलोय का इस्तेमाल बुखार में एक आयुर्वेदिक दवा के रूप में लाभ पहुंचाता है। इसका इस्तेमाल डायबिटीज रोगियों के लिए बहुत सारे फायदे हैं। डायबिटीज में गिलोय का सेवन करने से ब्लड शुगर कंट्रोल रहता है और पाचन तंत्र बेहतर बनाता है। यह इम्यूनिटी बढ़ाने में भी मददगार होता है। मोटापा कम करने के लिए गिलोय के अनेक फायदे हैं क्योंकि इससे शरीर का मेटाबॉलिज्म बेहतर होता है। आमतौर पर कहा जाए तो गिलोय का नुकसान न के बराबर है। वहीं कुछ मामलों में इसके सेवन करने से काफी नुकसानदेह साबित हो सकता है। गिलोय का इस्तेमाल गर्भावस्था के लिए काफी नुकसानदायक होते हैं। ब्लड शुग कम होने पर गिलोय के सेवन से नुकसान हो सकता है। यदि आपका पाचन ठीक नहीं रहता तो इस नुकसान हो सकते हैं।



Scanned with AnyScanner

धीरज कुमार
वरीय लेखाकार

# शान की सवारी

मेरी शान की सवारी साईकिल है। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तभी से यह मेरे साथ एक अभिन्न मित्र की भाँति है। इसके गुणों अथवा फायदों के बारे में तो डॉक्टर से लेकर आम लोग तक सभी परीचित है। इनमें से कुछ लाभों की ओर मैं लोगों का ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ। सबसे पहले साईकिल जो लोग नियमित रुप से चलाते हैं, उनका मोटापा कम होता है। यह एक अच्छा व्यायाम का साधन है। वैसे लोगों पर बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। सुबह-सुबह साईकिल से सैर करने निकले युवाओं को अनेक देवियों के दर्शन का लाभ मिलता है। ताजी हवा भी फेफड़ों में आनन्द भर देती है।

दूसरा लाभ यह है कि साईकिल चलाने के लिए किसी प्रकार के ईधन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जब मर्जी पैडल मारा और चल दिए। पेट्रोल की कीमतों में आए दिन बेतहाशा वृद्धि हो रही है। जिसके कारण कार, मोटर साईकिल आदि चलाना काफी खर्चीला साबित हो रहा है। बसों, ट्रेनों में सीट की मारामारी रहती है। अगर आप कहीं जा रहे हो किसी सुनसान इलाके में आपके कार का पेट्रोल खत्म हो गया तो फिर आपको कार वहीं छोड़कर पैदल कई किलोमीटर का सफर तय करना पड़ सकता हैं। वहीं साईकिल खराब होने पर आप उसे धीरे-धीरे चलाते हुए साथ ला सकते हैं। कार, मोटर साईकिल आदि के लिए परिवहन विभाग से ड्राइविंग लाईसेंस, ईन्श्योरेंस, प्रदूषण सर्टिफिकेट आदि के लिए चक्कर लगाते रहना पड़ता है। साईकिल के लिए किसी प्रकार के प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

मुझे अपने विजेता होने को एहसास तब होता है, जब मैं किसी रेलवे फाटक/ गुमटी पर अपने साईकिल के साथ जाता हूँ। वहाँ अन्य बड़े-बड़े वाहनों, कारों आदि के साथ उनके मालिक घंटों फाटक खुलने का इंतजार करते हैं, और मैं उनके सामने अपनी साईकिल से आसानी से गुमटी पारकर निकल जाता हूँ। इसके अलावे अगर आप घोड़े से गिर जाते हैं तो आपके पैर/ कमर टूट जाता है। मोटर साईकिल बस, कार आदि दुर्घटनाग्रस्त हो तो आपके अंग-प्रत्यंग भंग हो जाते हैं, मृत्यु की भी संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। वायुयान दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उसमें बैठे व्यक्ति की लाश भी नहीं मिलती, बचने वाले अत्यंत भाग्यवान माने जाते हैं। इसके विपरीत साईकिल से गिर जाने पर मात्र आपके हाथ-पाँव छिल जाते हैं। आए दिन अखबारों में यह समाचार छपता है कि शहर/ महानगरों में प्रदूषण का स्तर काफी खतरनाक हो गया है। लोगों को साँस लेने में कठिनाई हो रही है। इसका सबसे बड़ा कारण वाहनों से निकलने वालो धुँआ है। लोग साईकिल से यात्रा करेंगे तो यह समस्या दूर हो सकने में काफी मदद मिलेगी। साईकिल प्रदूषणमुक्त सवारी है। अगर जीवन के आनंददायक क्षणों की बात की जाए तो उस प्रेमी से पूछिए, जो अपनी प्रेमिका को अपनी साईकिल की अगली डंडी पर बैठाकर सड़कों, बाग-बगीचों, नदी-झरनों के किनारे अपने पैडलों के सहारे घुमाने ले जाता है, तो मित्रों अगर आप भी इस प्रकार का आनंद और लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो आज ही साईकिल खरीदिए और इसे चलाइए।



Scanned with AnyScanner

रजनीश कुमार,
द्वारा आशीष कुमार, डी० ई० ओ०

## एक शिक्षक का मनोभाव
(ऑनलाइन पढ़ाऊँगा)

कभी सोचा न था
मुस्कुराते बच्चों से
इतना दूर हो जाऊँगा
चॉक डस्टर छोड़
ऑनलाइन पढ़ाऊँगा ।

रोज लेता हूँ ऑनलाइन क्लास
लेकिन मन भाता नहीं पढ़ाने में
जिस फोन से दूर रहने को समझाता था
अब उसी से समझाऊँगा
कभी सोचा न था
ऑनलाइन पढ़ाऊँगा ।

लॉकडाउन में होते ढील
मैं जाने लगा स्कूल
लेकिन वह स्कूल नहीं
बच्चों के बिना सिर्फ इमारत है
खाली बेंचें, खाली क्लासें
गलियारा और मैदान वीरान है
ऐसे में स्कूल जाऊँगा
कभी सोचा न था
ऑनलाइन पढ़ाऊँगा ।

बच्चे आज प्रश्न पूछते
लेकिन मैं पूछता हूँ अगर



Scanned with AnyScanner

वे नेटवर्क प्रोब्लम कह
क्लास छोड़ देते हैं
बिना डांटे उन्हें
अपने आप को समझाऊँगा
कभी सोचा न था
ऑनलाइन पढ़ाऊँगा ।

कभी वीडियो तो कभी गूगल टेस्ट बनाता हूँ,
लाख कोशिशों के बावजूद भी
शिक्षण अधुरा लगता है
दिल को यह आभास न था कि
अपने आप को इतना विवश पाऊँगा
कभी सोचा न था
ऑनलाइन पढ़ाऊँगा ।

Scanned with AnyScanner

सुमन संगम
वरीय लेखाकार

# बेचारा सिंड्रोम

भगवान एक बार विचरण और मनोरंजन के खयाल से पृथ्वी पर आए। उन्होनें सोचा कि अपनी रचना को जरा करीब से देखा जाए। एक छोटे से नगर पहुंचे तो उन्हें एक व्यक्ति दिखा जो देखने मे काफी परेशान प्रतीत हो रहा था। भगवान भी एक साधारण वेशभूषा में थे, ताकि घुलमिल सकें। भगवान को उस व्यक्ति से जान पहचान कर उसके कष्ट जानने की इच्छा हुई। वह उसके पास पहुँचे और बातें शुरू हुई। उस व्यक्ति का नाम काली पाण्डेय था। काली पाण्डेय एक मध्यम वर्गीय परिवार में पला-बढ़ा छोटा सा व्यापारी था। उम्र ४५ से ५० वर्ष के बीच। घर में पत्नी और दो बच्चे। बेटे की उम्र पच्चीस और बेटी की बीस। कमाई इतनी हो जाती थी कि गुजर-बसर ठीक-ठाक चल जा रहा था। पर एक परेशानी थी उसकी, 'असंतोष'। वह हमेशा लोगों के सामने अपना दुखड़ा रोता रहता था। कभी भी खुश नहीं दिखता किसी के सामने। हमेशा अपनी किस्मत को कोसता था।

भगवान ने काली से मिलकर थोड़ी जान पहचान बनाई और फिर उस से उसकी परेशानी का कारण पूछा।

काली - "क्या बताऊँ! जिंदगी में खुशी नाम की कोई चीज ही नहीं"।

भगवान- "ऐसी क्या बात हो गयी? क्या परेशानी है आपको?"

काली- "मेरे जोड़ों में बहुत दर्द रहता है और पत्नी को हमेशा सरदर्द रहता है"।

भगवान ने सोचा उसके कष्ट को दूर किया जाये।

भगवान- "अरे भई! ये तो बड़ा संयोग है। मेरे साथ भी यही परेशानी थी। फिर मैंने एक बड़े डॉक्टर को दिखाया और उन्होंने मुझे जो दवा दी उससे हमारे कष्ट दूर हो गए। वो दवा मेरे पास अभी भी बची हुई है। मैं तुम्हें देता हूँ। एक खुद खा लेना और एक पत्नी को खिला देना। तुम्हारे कष्ट दूर हो जाएंगे"।

यह कह कर भगवान ने अपनी दैवीय शक्ति का उपयोग कर काली के हाथ में दवा दे दिया। काली दवा लेकर घर चला गया। कुछ दिनों बाद भगवान कि इच्छा हुई कि काली का हाल-चाल लिया जाये। वह फिर काली से मिले और दवा के असर के बारे में पूछा। काली ने जवाब दिया कि दवा के असर से वह और उसकी पत्नी दोनों स्वस्थ हैं। और उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया।



Scanned with AnyScanner

भगवान ने फिर पूछा- "अब तो आप खुश होंगे! और तो कोई कष्ट नहीं"?

काली - "क्या बताऊँ! जिंदगी में खुशी नाम की कोई चीज ही नहीं"।

भगवान के पुछने पर उसने बताया- "बेटे की कहीं नौकरी नहीं लग रही। नौकरी के लिए परीक्षा देता है पर उत्तीर्ण नहीं हो पाता। एक बार अच्छी नौकरी लग जाए, फिर तो हमें आराम ही आराम"।

भगवान ने उस से कहा- " भरोसा रखो! उसे बहुत जल्द ही अच्छी नौकरी मिल जाएगी"।

यह कह कर भगवान चले आए और भगवान के दैवीय शक्ति से कुछ ही दिन बाद काली के बेटे को शहर में एक अच्छी नौकरी मिल गयी। कुछ दिनों बाद भगवान काली का हाल-चाल जानने पुनः उसके पास पहुंचे।

काली ने बेटे की नौकरी लग जाने की बात बताई और कहा कि उसका बेटा शहर में जाकर योगदान भी दे चुका है। भगवान ने काली से पूछा कि अब तो उसके कष्ट दूर हो गए। अब तो आप खुश होंगे।

काली ने अपना पुराना जवाब दोहराया- "क्या बताऊँ! जिंदगी में खुशी नाम की कोई चीज ही नहीं"।

भगवान ने चकित होकर कारण जानना चाहा तो उसने कहा- "बेटी कि उम्र शादी योग्य हो गयी है, अच्छा रिश्ता नहीं मिल रहा। और जो मिल रहा है वह दहेज में काफी रकम मांगते हैं। बस बेटी की शादी अच्छे से निपट जाए, फिर आराम ही आराम है"।

भगवान ने फिर एक बार अपनी दैवीय शक्ति का इस्तेमाल किया। कुछ दिनों बाद काली कि बेटी की शादी अच्छे एवं सम्पन्न परिवार में एक सुयोग्य लड़के से हो गयी। कुछ समय बाद काली के पास यह जानने के लिए पहुंचे कि अब उसका जीवन कैसा कट रहा है।

भगवान- "और बताओ भाई काली! सुना है, तुम्हारी बेटी की शादी बहुत अच्छे घर में हुई है"।

काली ने जवाब दिया-"आपने सच सुना है। लड़के वाले ने दहेज में एक भी रुपया नहीं लिया। बेटी खुशी खुशी अपने ससुराल चली गयी"। यह सुनकर भगवान पुछे- "अब तो खुश न होने की कोई वजह ही नहीं"।

काली ने दुखी मन से अपनी पुरानी बात दोहराई- "क्या बताऊँ! जिंदगी में खुशी नाम की कोई



Scanned with AnyScanner

चीज ही नहीं"।

भगवान हैरान हो गए और पुछे- "अब तुम्हें और किस तरह कि खुशी चाहिए"?

काली ने कहा- "असली खुशी तो उनके पास है जिनके पास बहुत सारा पैसा है, गाड़ी, बंगला, नौकर-चाकर हैं। हमारे नसीब में ऐसी खुशी कहाँ"!

भगवान ने भी जिद बांध ली कि इसकी हर इच्छा पूरी करनी है। उन्होने काली को एक लॉटरी के बारे मे बताया जिसका पहला इनाम में १ करोड़ रुपए, एक आलीशान बंगला और एक बेशकीमती गाड़ी है। भगवान के सलाह पर काली ने उस लॉटरी की टिकिट खरीदी और कृपा हुई कि उसे पहला इनाम भी मिल गया। फिर उसके चाहत कि सारी चीजें उसके पास थी।

भगवान ने सोचा कि अब तो इसकी सारी इच्छा पूरी हो गयी है। अब तो काली को किसी बात की शिकायत या दुख नहीं होना चाहिए। यही सब सोच भगवान फिर काली का समाचार लेने पहुंचे।

भगवान- "कैसे हो काली? तुम्हारे पास तो अब रूपये, बंगला, गाड़ी सब है। पर तुम अब भी खुश क्यूँ नहीं दिख रहे"?

काली - "क्या बताऊँ! जिंदगी में खुशी नाम की कोई चीज ही नहीं"।

भगवान आश्चर्यचकित रह गए। उन्होनें पूछा कि अब तुम्हें और किस चीज की लालसा है?

काली ने उत्तर दिया- "इन सब के बवाजूद वो जो सुख था न जब हम दो पति-पत्नी अपने दोनों बच्चों के साथ उस पुराने घर मे खाना खाते थे न बिना किसी चिंता और भय के, वो खुशी नहीं हैं यहाँ"।

भगवान समझ गए कि इस इंसान में "बेचारा सिंड्रोम" नामक बीमारी समा गयी है और इसे मैं भी खुश नहीं कर सकता। इसीलिए इसकी ये आखिरी ख्वाइश पूरी कर के वापस वैकुंठ लोक चलूँ।

फिर भगवान ने अपने बरसाई हुई सारी कृपा काली पाण्डेय से छिन ली और वह वापस अपने पुराने घर में चला गया अपनी पत्नी, बच्चे और जोड़ों के दर्द के साथ।



Scanned with AnyScanner

पिंकी कुमारी
स० ले० अ० तदर्थ

बचपन में अक्सर कोई मेहमान जब घर आते थे तो जाते वक़्त कुछ रुपय देते थे। उसकी एक अलग खुशी हुआ करती थी। रुपय लेकर उसे मैं मम्मी के हाथों में दे देती थी। माँ कहती थी की इन पैसों से तुम्हारे जरूरत की सामान ली जाएगी। सुकून मिलता था, समान मिले न मिले। फिर भूल जाया करती थी निश्चिंत होकर कि पैसे का सदुपयोग हो गया।

एक बार जब एक मेहमान आए और उन्होंने जाते वक़्त दस रुपये दिये, तो मैं सोची कि इस बार पैसे मम्मी को नहीं दूँगी क्यूंकी उन पैसों से मेरा कोई फायदा नहीं होता था। यह सोच मैंने पैसों को खुद खर्च करने का सोचा। मैं नजदीक के बाजार में गयी और दस रुपए कि बड़ी वाली चॉकलेट ली जो मैंने पहले एक ही बार खाई थी और वो भी एक भैया ने खिलाया था और मुझे बहुत पसंद आया था। मैं खुशी से उस चॉकलेट को खाई। थोड़ी देर में चॉकलेट खत्म हो गया और उसके साथ ही पैसा भी। मन में असंतोष जागने लगा। ऐसा भाव आने लगा कि पैसा बर्बाद हो गया। एक ही झटके में खत्म। माँ के पास होता तो कोई न कोई जरूरी काम में ही लगता, पर मैं उन पैसों से इतनी महंगी चॉकलेट खा गयी। काफी बुरा लग रहा था, मन उदास था पर समय हाथ से निकाल चुका था। इस असंतोष के भाव की वजह से एक बात मैंने ठान ली कि आगे से मेरे पास कोई भी पैसा आए, वो मम्मी को ही दूँगी। और अगर किसी चीज को खरीदने कि इच्छा हो तो उनसे ही कहूँगी।



Scanned with AnyScanner

गैरों के लिए ख़्वाब यहाँ कौन रखता है।
अब चश्म -ए- पुर -आब यहाँ कौन रखता है।।

हर शख़्स अपने होठों पे रखता सवाल हैं।
लब पे कोई जबाब यहाँ कौन रखता है।।

हर शक्ल में छुपी है कई शक्ल देखिए।
शक्लों पे अब हिज़ाब यहाँ कौन रखता है।।

दौलत कमाने की यहाँ एक होड़ सी लगी है।
अच्छा बुरा हिसाब यहाँ कौन रखता है।।

दिल जान से वो चाहता, ये है ख़बर मुझे।
कम ज्यादा का हिसाब यहाँ कौन रखता है।।

तेरी आँखों सा नशा भी कहाँ मयकदे में है।।
इतनी भली शराब यहाँ कौन रखता है।।

मेरी बुराई ही नहीं अच्छाई भी तू देख।।
बिन काँटों के गुलाब यहाँ कौन रखता है।।

अब इश्क भी कहीं नहीं लैला सा मजनू सा ।
अब प्यार बेहिसाब यहाँ कौन रखता है।।

हर शय में " देवदूत" छुपे राज क्या करें।
खुद को खुली किताब यहाँ कौन रखता है।।



Scanned with AnyScanner

ज्योति केशरी
पत्नी-देव प्रकाश केशरी
वरीय लेखाकार

# ईर्ष्या, क्रोध और अपमान

गोवा में एक जॉनसन मास्टर रहते थे, वो अब वृद्ध हो चुके थे, और अपने आश्रम में बुद्धिज्म शिक्षा देते थे। एक नौजवान योद्धा, जिसने कभी कोई युद्ध नहीं हारा था, ने सोचा की अगर मैं मास्टर लड़ने के लिए उकसा कर, उन्हें लड़ाई में हरा दूँ तो मेरी ख्याति और भी फ़ैल जायेगी और इसी विचा साथ वो एक दिन आश्रम पहुंचा।

कहाँ है वो मास्टर, हिम्मत है तो सामने आये और मेरा सामना करे। योद्धा की क्रोध भरी आव पूरे आश्रम में गूंजने लगी। देखते -देखते सभी शिष्य वहां इकट्ठा हो गए और अंत में मास्टर भी पहुँच गए। उन्हें देखते ही योद्धा उन्हें अपमानित करने लगा, उसने जितना हो सके उतनी गालियाँ अपशब्द मास्टर को कहे, पर मास्टर फिर भी चुप रहे और शांति से वहां खड़े रहे।

बहुत देर तक अपमानित करने के बाद भी जब मास्टर कुछ नहीं बोले तो योद्धा कुछ घबरा लगा। उसने सोचा ही नहीं था की इतना सब कुछ सुनने के बाद भी मास्टर उसे कुछ नहीं कहेंगे... उ अपशब्द कहना जारी रखा, और मास्टर के पूर्वजों तक को भला-बुरा कहने लगा... पर मास्टर तो म बहरे हो चुके थे, वो उसी शांति के साथ वहां खड़े रहे और अंततः योद्धा थक कर खुद ही वहां से च गया। उसके जाने के बाद वहाँ खड़े शिष्य मास्टर से नाराज हो गए, " भला आप इतने कायर कैसे सकते हैं, आपने उस दुष्ट को दण्डित क्यों नहीं किया? अगर आप लड़ने से डरते थे, तो हमें आदेश दि होता, हम उसे छोड़ते नहीं" शिष्यों ने एक स्वर में कहा।

मास्टर मुस्कुराये और बोले, " यदि तुम्हारे पास कोई कुछ सामान लेकर आता है और तुम नहीं लेते हो तो उस सामान का क्या होता है?" वो उसी के पास रह जाता है जो उसे लाया था", कि शिष्य ने उत्तर दिया। यही बात इर्ष्या, क्रोध और अपमान के लिए भी लागू होती है, मास्टर बोले। ज उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता तो वे उसी के पास रह जाते हैं, जो उन्हें लेकर आया था।



Scanned with AnyScanner

अर्चना
वरीय लेखाकार

# वो गलियाँ

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।

कभी बेहद पास कभी दुर ही से,
कभी चुपके कभी चिल्लाकर।
कभी हकीकत बन कभी सपनों में आकर,
मुझको मुझसे मिलाती रहीं।।

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।

गुजर रहीं थी फिर मैं उनके सिरहाने से,
सोचा बचके निकल जाऊँ किसी बहाने से।
कुछ न बन पड़ा उनसे तो,
खुद के नाम से मुझको चिढ़ाती रहीं।।

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।

क्या बचा है अब तेरे पास,
कभी भी बहुत अब नहीं तू उतनी खास।
इतना मेरा कहना था,
फिर कहाँ उनका चुप रहना था।।
वो दिन हठीले, वो ठाठ, वो नखड़े
ऐसी बातों की दे दुहाई
यादों के तमाचे मुझको लगाती रहीं।।

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।

साँस की गरमाहट पे पड़ती ठंडी बुंदों

से उड़ती वो सोंधी–सोंधी खुशबू
बड़े–बड़े सपनों के वो
छोटे–छोटे गुफ्तगू
रह रहकर मुझको रुलाती रही।

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।

सोचती हूँ कुछ पल रुकूंगी उन विरानियों में
लिखूँगी वो सारे किस्से अपनी कहानियों में
अधखुली वो भोर साँवली
तपती वो पहर रुपहली
किसी हाल में बेवजह हीं मुस्कुराती रहीं

वो गलियाँ अक्सर बुलाती रहीं,
मुझसे अपनापन जताती रहीं।



Scanned with AnyScanner

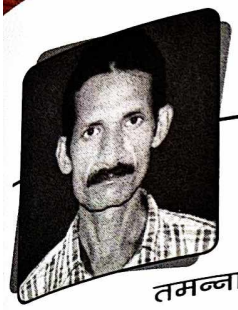

मो० आफताब अंसारी
वरीय लेखाकार

# चाह मेरी बस इतनी है

तमन्ना नहीं आसमानों को छूने की
मेरे पैर जमीं पर रहें, चाह मेरी बस इतनी है।
नहीं चाहिए मुझे गैरों के बीच चमचमाती दुनिया,
मैं तो अंधेरों में ही खुश हूँ अपनों के बीच।
मुझे परवाह नहीं दुनिया की जो उसने नहीं समझा,
मुझे मेरे अपने ही समझ जाए, चाह बस मेरी इतनी है।
दिल में दर्द दफन कर मैं हँसता गाता फिरता हूँ,
मेरे सुर्ख आँखों के राज समझ जाए मेरे बस अपने।
चाहे सितारे वक्त से दूर हो जाए मुझसे कितना,
मेरे अपने बिछड़ न जाए, चाह बस मेरी इतनी है।
खुला आसमाँ और आँगन में बिछी चटाई,
बड़े स्नेह से माथे मेरे, सहलाती माँ की कलाई।
गिन कर अंगुलियों से सितारों को
खुद को कहने की वो नादान अदाऐं,
बचपन के चंद पल ही जी लूँ खुलकर
चाह बस मेरी इतनी है।



Scanned with AnyScanner

कुमारी संगीता सिन्हा
वरीय लेखाकार

महाराजा चन्द्रगुप्त का दरबार लगा हुआ था। सभी सभासद अपनी अपनी जगह पर विराजमा थे। महामन्त्री चाणक्य दरबार की कार्यवाही कर रहे थे।

.महाराजा चन्द्रगुप्त को खिलौनों का बहुत शौक था। उन्हें हर रोज़ एक नया खिलौना चाहिए। आज भी महाराजा के पूछने पर कि क्या नया है; पता चला कि एक सौदागर आया है और कुछ अ खिलौने लाया है। सौदागर का ये दावा है कि महाराज या किसी ने भी आज तक ऐसे खिलौने न कभ देखें हैं और न कभी देखेंगे। सुन कर महाराज ने सौदागर को बुलाने की आज्ञा दी। सौदागर आया और प्रणाम करने के बाद अपनी पिटारी में से तीन पुतले निकाल कर महाराज के सामने रख दिए और कह कि अन्नदाता ये तीनों पुतले अपने आप में बहुत विशेष हैं। देखने में भले एक जैसे लगते हैं मगर वास्तव में बहुत निराले हैं। पहले पुतले का मूल्य एक लाख मोहरें हैं, दूसरे का मूल्य एक हज़ार मोहरें और तीसरे पुतले का मूल्य केवल एक मोहर है।

सम्राट ने तीनों पुतलों को बड़े ध्यान से देखा। देखने में कोई अन्तर नहीं लगा, फिर मूल्य में इतना अन्तर क्यों? इस प्रश्न ने चन्द्रगुप्त को बहुत परेशान कर दिया। हार के उसने सभासदों को पुतले दिये और कहा कि इन में क्या अन्तर है मुझे बताओ। सभासदों ने तीनों पुतलों को घुमा फिराकर सब तरफ से देखा मगर किसी को भी इस गुत्थी को सुलझाने का जवाब नहीं मिला। चन्द्रगुप्त ने जब देखा कि सभी चुप हैं तो उस ने वही प्रश्न अपने गुरू और महामन्त्री चाणक्य से पूछा।

चाणक्य ने पुतलों को बहुत ध्यान से देखा और दरबान को तीन तिनके लाने की आज्ञा दी। तिनके आने पर चाणक्य ने पहले पुतले के कान में तिनका डाला। सब ने देखा कि तिनका सीधा पेट में चला गया, थोड़ी देर बाद पुतले के होंठ हिले और फिर बन्द हो गए। अब चाणक्य ने अगला तिनका दूसरे पुतले के कान में डाला। इस बार सब ने देखा कि तिनका दूसरे कान से बाहर आगया और पुतला ज्यों का त्यों रहा। ये देख कर सभी की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि आगे क्या होगा। अब चाणक्य ने तिनका तीसरे पुतले के कान में डाला। सब ने देखा कि तिनका पुतले के मुँह से बाहर आगया है और पुतले का मुँह एक दम खुल गया। पुतला बराबर हिल रहा है जैसे कुछ कहना चाहता हो। चन्द्रगुप्त के पूछने पर कि ये सब क्या है और इन पुतलों का मूल्य अलग अलग क्यों है, चाणक्य ने समझा दिया।

राजन, चरित्रवान सदा सुनी सुनाई बातों को अपने तक ही रखते हैं और उनकी पुष्टी करने के



Scanned with AnyScanner

बाद ही अपना मुँह खोलते हैं। यही उनकी महानता है। पहले पुतले से हमें यही ज्ञान मिलता है और यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य एक लाख मोहरें है।

कुछ लोग सदा अपने में ही मग्न रहते हैं। हर बात को अनसुना कर देते हैं। उन्हें अपनी वाह-वाह की कोई इच्छा नहीं होती। ऐसे लोग कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाते। दूसरे पुतले से हमें यही ज्ञान मिलता है और यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य एक हज़ार मोहरें है।कुछ लोग कान के कच्चे और पेट के हलके होते हैं। कोई भी बात सुनी नहीं कि सारी दुनिया में शोर मचा दिया। इन्हें झूठ सच का कोई ज्ञान नहीं, बस मुँह खोलने से मतलब है। यही कारण है कि इस पुतले का मूल्य केवल एक मोहर है।



Scanned with AnyScanner

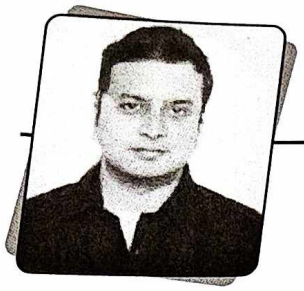

सुमन संगम
व० लेखाकार

# प्रेयसी बनाम कार्यालय

सप्ताह के पाँच दिन और दिन के आठ घंटे कार्यालय में बिताने के बाद बाकी के समय में भी कार्यालयी गतिविधियों को मन से क्षण भर को ओझल करना भी मुश्किल काम होता है हम सरकारी कर्मचारियों के लिए। इसी क्रम में जब प्रेयसी संग प्रणय की बारी आती है तो जहां प्रेमी युगल के मन के मधुर तार बजने चाहिए, वहाँ क्या होता है, प्रस्तुत प्रसंग से समझिए।

(बाएँ तरफ प्रेमिका एवं दाहिने तरफ प्रेमी है)

प्रेम हमारा जीवन भर का, नहीं ये दो पल का फसाना है,
अरे मैं भूल गया था, मुख्यालयी पत्र का जवाब भी तो जाना है।
थोड़ा कसरत-वसरत किया करो तुम्हारा पेट न निकाल जाये,
सशंकित हूँ मैं तो कि कहीं RTI का डेट न निकल जाये।
खूबसूरती तुम्हारे सामने है, अच्छे से निहार लो,
ऊपर से आदेश आया है, लंबित काम को थोड़ा रफ्तार दो।
उलझी है जुल्फें मेरी, अपनी उँगलियों से संवार दो,
सब की आस है सरकार से, अच्छी डीए का उपहार दो।
कभी थोड़ी तारीफ भी किया करो, बड़े अकल्पित हो तुम,
मेरे बड़ा बाबू तो कहते हैं, कार्य के प्रति बड़े संकल्पित हो तुम।
बड़े बेईमान हो तुम, झूठ का मुझे बहलाते हो,
पिक्चर दिखाने के बहाने बुलाकर सस्ते रैस्टौरैंट में बैठाते हो।
जेब जितनी इजाजत देती है, उतनी पैर फैला लेता हूँ
बेईमानी तो बस इतनी की भोजनावकाश को थोड़ा बढ़ा लेता हूँ।

कल भी मिलूँगी इसी समय तुमसे, बस कोई जरूरी काम न आ जाये,
मेरी तो बस प्रार्थना है, इलेक्शन ड्यूटी में नाम न आ जाये।
इस शनिवार आओ घर पर, तुम्हें मेरे परिवार का डेमो मिलेगा,
शनिवार को तो कार्यालय बुलाया गया है, न जाने पर मेमो मिलेगा।



Scanned with AnyScanner

तुम मेरे हो याद रखना, कभी मुझे छोड़ कर मत जाना,
पर जब तुम्हारी सैलरी बढ़ जाए, तब ही रिश्ता लेकर आना।

कभी तो पदोन्नति मिलेगी मुझे, इसी उम्मीद में जी लेता हूँ,
कार्यालय के बाहर राजू के दुकान पर मित्रों संग चाय भी पी लेता हूँ।

इतनी भी क्या हड़बड़ी जाने की, अभी तो बस दस बजने को है,
और देर किया तो आधी छुट्टी जाएगी, अब हाजिरी कटने को है।

Scanned with AnyScanner

आभा झा
द्वारा- अविनाश ठाकुर, स० ले० अ०



हमारी शोख़ नजरों पे हजारों रोज मरते हैं:
मगर दीवानगी मेरी तुम्हीं पे वार करती है।

तुम्हारी हर अदा पे हो फिदा मदहोश रहती हूँ:
तुम्हारी जुस्तज़ू लाचार बारम्बार करती है ।

नज़र के कैमरे को ज़ूम करके ढूंढ़ती हूँ मैं:
अगर दिख जाय तो मस्ती के रम में झूमती हूँ मैं।

मैं खुलकर बोलदुंगी अपने मन से बोलती हूं मैं:
मगर तन्हाई में ही राज दिल का खोलती हूँ मैं ।

न मुरझाए मेरा गुलशन अश्क से सींचती हूँ मैं:
बड़े आराम से फूलों को छूकर रीझती हूँ मैं ।

मेरे जज़्बात का सैलाब लव पे आ ठहर जाता:
मगर आंखों से आँखें कई दफ़ा इज़हार करती है।

अकेले ही अकेले देर तक मैं रू-ब-रू होती:
हमारी गुफ़्तगू हर लफ़्ज़ पे ऐतवार करती है।



Scanned with AnyScanner

संजय कुमार ओझा
वरीय लेखाकार

# कोरोनासुर

ये कैसी विपदा आई है, चहूँ दिस फैला है सुनसान,
कौन बचाएगा इस जग को, जब कैद में है भगवान।

मानव से मानव डरा हुआ, है बनी हूई बड़ी दूरियाँ,
मानवता छुपी हूई दुल्हन सी, पहन हाँथ में चूडियाँ।

संगरोध का जहर मनुज, कैसे नि ंक हो पी सकता,
दूर दूर रहकर साथ में, भला कौन यहाँ जी सकता।

पापी पेट की ज्वाला भीशण, खीच कर बाहर लाता है
होता है संक्रमित मनुज या भूखा ही वह मर जाता है।

तपता है तन काल ज्वर से, फूल रही है सासें,
पड़ा हुआ गतिहीन मनुज, मानो जिंदा हो ला ें।

खेल रही है पुलिस डांडिया, सुनी पड़ी सी राहों में,
सिसक रहा मासूम भूख से, बेबस माँ की बाहों में।

मुँह पर पट्टा बंधा हुआ है, आँखें हो गई है लाचार,
कोरोनासुर के हाँथो मरकर, नही मिल रहे कंधे चार।

नही लिपट कर रोया कोई, अंत्येश्टि हो गई मुहाल,
फेका जाता भाव थैले में, मानवता हो गई कंगाल।

कातिल ब्याधि का पल पल, बढ़ता जाता है आकार,
नही कोई उपचार सुलभ है, सदमे में बैठी सरकार।

जुटे हुए है मारक बन कर, ग्रह, नक्षत्र और तारे,



Scanned with AnyScanner

बरपा रहे हैं कहर धरा पर, बनकर निर्दयी हत्यारे।

कैसा ग्रहण लगा मनुज पर, जीवन की चंदा काली,
दिन का आलम है ऐसा कि गगन सूर्य से खाली।

घर के चुल्हे ठंढे पड़ गए, लपटे उठती भमसान में,
भंवर बीच में पड़ी है नैया, कोविड के तूफान में।

पीले हाँथ हुए बिन रह गए, बाबुल सिधरे सुरधाम,
हुआ अनाथ पलनों में जीवन, लुटा कोई सरेआम।

आओ लड़कर करे सभी हम, कोरोनासुर का अन्त,
पुष्पित होगा जीवन उपवन, आयेगा पुनः बसन्त।

.....



Scanned with AnyScanner

अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरीय लेखा अधिकारी

जिज्ञाषा और जिजीविषा मनुष्य के नैर्सगिक गुण हैं। अपनी ज्ञान पिपासा की शांति के लिए लोग पहले जहाँ पुस्तकालयों एवं गुरुओं के शरण में जाते थे, अब अधिकांश ' गूगल ' की शरण लेते हैं। किन्हीं को किसी प्रश्न का समाधान चाहिए अथवा साधारण सी गणना करनी हो उनकी अंगुलियाँ स्वाभाविक रूप से इंटरनेट या संगणक पर चली जाती हैं। समय के साथ ज्ञान प्राप्ति के स्वरूप में हुए इस परिवर्तन को बुरा तो हम नहीं कह सकते, लेकिन यह स्वस्थ्य तरीका नहीं है। यह तरीका आत्मनिर्भरता को निर्बल तो करता ही है, इस तरह से प्राप्त ज्ञान मानस पटल पर उस तरह से दीर्घकाल तक अंकित नहीं रह पाता है जो पुस्तकालयों और गुरुओं से प्राप्त ज्ञान के मामले में होता है। संस्कृत में एक श्लोक है:–

**पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं च धनम्।**

**कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद् धनम्।।**

अर्थात् : पुस्तक (यहाँ इंटरनेट) में रखी विद्या तथा दूसरे के हाथ में गया धन कृये दोनों ही ज़रूरत के समय(यहाँ जब नेट उपलब्ध न हो ) हमारे किसी काम नहीं आता है।

लेकिन ज्ञान प्राप्ति के इन आधुनिक एवं सशक्त श्रोतों को एकदम नकार देना भी बुद्धिमता नहीं है। हाँ किसी जानकारी के लिए संगणक अथवा गूगल का रुख करने के पूर्व पर्याप्त मानसिक कसरत करनी चाहिए, ताकि हमारा मन मस्तिष्क सक्रीय रह सके और ज्ञान के अन्य श्रोत अपनी वजूद कायम रख सकें। आप कितने दिन पहले किसी पुस्तकालय मे गए हैं ? किसी जानकारी के लिए आपने कितने दिन पूर्व किसी पुस्तक के पन्ने उल्टे हैं ? इन प्रश्नों से आत्मपरीक्षण अवश्य करें। इन दोनों प्रश्नों के उत्तर हमारे परम्परागत ज्ञान प्राप्ति के श्रोत के दयनीय स्थिति को दर्शाता है। आज इन्टरनेट ने पुस्तकों को ई–बुक्स में, पुस्तकालयों को ई–लाइब्रेरी में बदल दिया है। यहाँ तक कि गुरुओं का स्थान करीब करीब online expert ने ले लिया है। इसका स्याह पक्ष है इंटरनेट नहीं रहने पर ये शून्य हैं। यह शुरू में उल्लेखित संस्कृत के श्लोक की प्रासंगिकता एवं शाश्वतता को इंगित करता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप भी अब गूगल अथवा संगणक के इस्तेमाल के पहले यथासंभव अन्य श्रोतों को अवशय ही आजमाएँगे। शुभस्य शीघ्रम अतः इसकी शुरुआत आप आज से नहीं बल्कि अभी से ही कर दें। इसे परखने के लिए आपके सम्मुख एक तथ्य रखता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि इसके समाधान के लिए आप इंटरनेट के बिना ही प्रयास करेंगे।



Scanned with AnyScanner

## ।।।—01 सेकंड से छुट गया—।।।

क्या छुट गया ? बस, ट्रेन, जहाज, रॉकेट, कोई बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अथवा कुछ अन्य। अ
इसका उत्तर आपके पास है तो आपका अध्ययन प्रणाली अनुकरणीय है और आपका ज्ञान प्रशंसनीय है।अ
आपके पास इसका उत्तर तत्काल नहीं है तो आप धन्य हैं क्योंकि इसका उत्तर आप इंटरनेट से नहीं प्राप्त क
और इसे प्राप्त करने के लिए जो आप उपक्रम करेंगे, उससे न सिर्फ परम्परागत ज्ञान प्राप्ति के तरीकों की दयन
दशा को सुधारेगा, बल्कि पठन–पाठन की पुरानी रीत जिसे इंटरनेट ने भारी क्षति पहुंचायी हैं, को भी बढ़
मिलेगा। हमारे पूर्वजों को यजुर्वेद, अथर्वेद समेत कई आदिग्रंथ कंठस्थ थे। आज भी आपको ऐसे व्यक्ति मि
जाएँगे जो लिख–पढ़ तो नहीं सकते लेकिन उन्हे रामचरित्मानस के दोहे और चौपाई कंठस्थ हैं। आदमी की
बात ही छोड़िए! यहाँ तो तोते भी गीता के श्लोक का वाचन करते हैं। ऐसी है हमारी संस्कृति और ये है हम
सामर्थ्य। हमारे आपके इस छोटे से प्रयास से यदि पुरानी संस्कृति की ओर लौटने की प्रवृति पनपती है तो स
मायने मे हम पूर्वजों के उत्तराधिकारी कहलाएंगे। तो उधम करें आपके सम्मुख रखे प्रश्न के उत्तर के लिए।
कुछ नहीं तो इस लेख के पाठन मात्र से ही इसका उत्तर मिल जाएगा। हाँ इससे संबंधित एक संकेत मैं उल्ले
करता हूँ लगभग तीन दशक पूर्व घटित यह घटना कोई छोटे टोले–मुहल्ले की घटना नहीं है ।इस घटना की च
उस समय भी और आज भी विश्वस्तर पर हुई थी /होती है।

हम अपनी आँखों से जो भी चीजें देख सकते हैं और मस्तिष्क से सोच सकते हैं, ये समस्त कृतियाँ ब्र
द्वारा निर्मित हैं और सबों की एक निश्चित आयु निर्धारित है। एक निर्धारित समय के बाद इन्हें नष्ट हो जाना
ब्रहमाजी ने खुद अपने लिए भी आयु निर्धारित कर राखी है जो $3.11x10^{15}$ मानव वर्ष के बराबर है। काल अथ
समय निरपेक्ष है। विश्व की समस्त घटनाएँ ब्रह्मा की सृष्टि, विष्णु की पालनहार और महेश की विनाश
अवधारणा से आच्छादित है। ऐसी किसी भी घटना या कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है जो इस अवधार
से परे हो। हाँ काल अथवा समय इन तीनों अवधारणाओं की भूमिका मैं रहता तो है फिर भी इससे स्वतंत्र है।
निरंतर चलयमान और निरपेक्ष है और इसीलिए कालचक्र के रूप मे जाना जाता है। काल चक्र के प्रभाव
भौतिक अथवा परा–भौतिक कोई भी बच नहीं सकता। काल चक्र मे सृष्टि–विनाश, उत्थान–पतन, मान–अपम
अभिजात– राहुकाल एवं संपन्नता–विपदा सभी समभाव से चलते रहते हैं। हम मानव ही काल चक्र के इन समभ
को "काल के गाल" एवं "भगवान के वरदान" के रूप में विभाजित कर रखे हैं। काल चक्र जब विनाश, पतन
विपदा लेकर आती है तो हम यह कहकर संतोष कर लेते है की ये सब काल के गाल मे समा गए, और जब
विट, उत्थान एवं संपन्नता लेकर आता है तो इसे हम भगवान के वरदान के रूप मे स्वीकार करते है। ब्रह्मांड
विराट घटनाएँ ही नहीं, हमारी छोटी छोटी गतिविधियां भी काल अथवा समय से बँधे हुए हैं। हमारे बच्चे



Scanned with AnyScanner

स्कूल आना जाना, हमारे कार्यालय मे उपस्थित रहना ,वेतनवृद्धि मिलना, सेवानिवृत्त होना, प्रोन्नति, स्थान्नानतरण, हमारी जन्म–मृत्यु सभी समय से बंधे हुए है। सही मायने मे हम सब समय के हाथ के कठपुतली हैं। काल और कर्म के परस्पर संबंध की विशद व्याख्या हमारे धर्मग्रंथों में की गई है। संत तुलसीदास का –कर्म प्रधान विश्वकरी रखा–––या आदिग्रंथ गीता में कर्म की मर्मज्ञता समेत अन्य ग्रन्थों में कर्मों का जो वर्णन है, उसे समझने के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता है और इसपर देश मे ही नहीं विदेशों में भी अनुसंधान हो रहा है। अतः काल की सार्वभौमिकता को स्वीकार करते हुये इस मामले को यही विराम देना उचित है ।

COVID-19 (Corona Virus Disease-2019) के माध्यम से काल ने एक बार फिर से अपना गाल बजाया है। अनेक बेशकीमती जीवों को इसने अपने उदर में समाहित कर लिया है। असमय काल कवलित हुए लोगों की संख्या का आंकड़ा कहाँ पहुँचेगा ये काल को ही पता है। सर्वसंसाधनयुक्त विकसित अमेरिका और इटली जैसे देशों ने इसके सामने हथियार डाल दिये हैं। इसे नियंत्रित करने में वे अबतक नाकाम रहे हैं। अमेरिका इटली ही क्यों, इस वैश्विक महामारी ने तो पूरे मानव समाज के तथाकथित प्रगति को बौना साबित कर दिया है। अनिश्चितता, अशांति, अविश्वास और अफरा तफरी का जो माहौल इसके प्रादुर्भाव से उत्पन्न हुआ है, उसकी कीमत हमे कई दशकों तक चुकानी होगी। कोरोना से मृत व्यक्ति के अंतिम संस्कार से परिजनों के पलायन की घटना हृदय को विदीर्ण करती है। हजार –हजार किलोमीटर की दूरी तय कर आने वाले परदेशियों को गाँव या घर मे स्वजनों द्वारा प्रवेश न देने की घटना को हम सुरक्षा की दृष्टि से भले ही हम ठीक ठाक कह लें परंतु यह त्याग, बलिदान, करुणा और वसुधैव कुटुम्बकम की हमारी परंपरा पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह लगता है और हमारे समाज के मूलभूत सिद्धांत पर कुठराघात करता है। महामारी के कारण गरीब– अमीर, परदेशी–स्वदेशी, स्वजन–परजन, डॉक्टर– मरीज, पिता पुत्र, ग्रामीण–शहरी के रिश्तों में जो घुन लगा है इसका विकृत रूप आने वाले दिनों मे हमें देखने को मिलेंगे। हजार बारह सौ किलोमीटर की यात्रा वो भी नंगे पाँव, भूखे– प्यासे बोझ के साथ को हम जिजीविषा कहकर संतोष नहीं कर सकते क्योंकि इससे एक आशंका उत्पन्न हो गई गई है कि क्या मनुष्य के व्यवहार में होनेवाले ये परिवर्तन मानव के मशीनीकरण के संकेत तो नहीं ?

जीवों के जीन में परिवर्तन के फलस्वरूप जीवों में हुए खौफनाक बदलाव के अनेक वैज्ञानिक सबूत इतिहास में मौजूद है। हॉलीवुड की अनेक फिल्में इस विषय वस्तु पर हैं जिन्हें देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं मशीन में करुणा ,त्याग, बलिदान की भावना नहीं होती। इन गुणों से रहित मानव किस तरह के समाज का निर्माण करेंगे ? तो क्या हमें इस स्थिति के लिए मानसिक रूप से तैयार रहनी चाहिए ? भले ही हमें और आपको इस स्थिति का सामना नहीं करना पड़े परंतु हमारी आनेवाली पीड़ियों को इन स्थिति का सामना करना पड़ेगा इसकी प्रबल संभावना है। वस्तुतः COVID-19 ने हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक



Scanned with AnyScanner

एवं पारिवारिक भविष्य संक्रमित कर दिया हैं।

उपर्युक्त के एकदम उलट इस वैश्विक महामारी से कुछ कल्याणकारी घटनाएँ भी हुयी हैं। विश्वव्यापी लॉकडाउन से पर्यावरण प्रदूषण में रिकॉर्ड स्तर की कमी आई है ।हवा, नदियाँ, आकाश समेत पूरी धरती स्वच्छता की उच्चतम स्थिति को प्राप्त किया है । विज्ञानियों का मत है की यदि प्रदूषण की यही स्थिति बरकरार रहती है तो भूकंप जैसी आपदा का भी सटीक भविष्यवानी समेत अनेक लाभकारी अनुसंधान संभव हो सकेगा। गंगा नदी ने निर्मलता की जो स्थिति प्राप्त की है वह नमामि गंगे समेत कई अन्य परियोजनाएँ जिनका बजट करोड़ों का है, ने कभी प्राप्त नहीं किया। सीतामढ़ी अथवा लुधियाना से नंगी आखों से हिमालय के दिखने की चमत्कारी और विस्मयकारी घटना पर्यावरण शुचिता का ही प्रमाण है। इस वाइरस ने HI, BYE (क्रमशः मिलन एवं विदाई के लिए प्रयुक्त शब्द, जिसके उच्चारण में मास्क बाधा है) एवं हैंडशेक (हाथ मिलाने) की विश्व प्रचलित प्रथा को नमस्कार करने की विशुद्ध भारतीय परंपरा से प्रतिस्थापित कर दिया है। घर मे प्रवेश के पूर्व हाथ पैर धोने, गमछा मुरेठा उपयोग की भारतीय परंपरा का अनुकरण आज पूरा विश्व कर रहा है। इस त्रासद काल में अपनी प्राचीन प्रथा से ही नहीं दवा के रूप मे भी सहयोग कर भारत ने विश्व को उपकृत किया है। साहित्यिक क्षेत्र भी कोरोना से अछूता नहीं रहा। क्वारेंटीन, आइसोलेशन एवं सेनेटाइजेशन जैसे वैज्ञानिक शब्द आम लोगों की भाषा बन गई। आज शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो इन शब्दों से अनभिज्ञ हो। वेबिनार (इंटरनेट के उपयोग से सेमिनार) जैसे कई शब्द साहित्य को मिला।

निश्चित ही कोरोना के प्रभाव असरदार और दूरगामी होंगे ।एक इतिहासकार का दावा है कि कालखंड को विर्निदिष्ट करने वाले शब्द AD (आफ्टर डोमिनी) एवं BC( बिफोर क्राइस्ट) अब After Disease for corona एवं Bfeore Coron के रूप में भी जाने जाएंगे। यों तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं तकनीकी रूप से सक्षम बड़े संस्थानों में वर्क फ्रोम होम का प्रचलन Bfeore Coron काल से ही है परंतु कोरोना के कारण हुए विश्वव्यापी लॉकडाउन ने वर्क फ्रोम होम के प्रचलन को इतना बढ़ावा दिया कि आज छोटे छोटे संस्थान भी इसका धड़ल्ले से उपयोग कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब विशाल अट्टालिकाओं में चलने वाले दफ्तर एक या दो कमरे में सिमट जाएँ। हाँ हमारे आवास का भी स्वरूप बदलने वाला है बेडरूम, डायनिंग, कीचेन के अलावा इसमे कार्यालय कक्ष का भी प्रावधान करना होगा जहां कार्य सम्पादन की तमाम साधनों का इन्तजाम रहेगा और यही से कार्यालय के समान काम का निष्पादन होगा। लॉकडाउन विशेषकर चरण 1 एवं 2 में सुरक्षा उपाय अथवा प्रशासनिक सख्ती के वजह से लोग 24 घंटे घर में रहने को मजबूर हो गए। इस दौरान मोबाइल, ई–मेल तथा व्हाट्स–ऐप का उपयोग अधिकाधिक होने लगे। विचारों के आदान प्रदान का इससे सुलभ कोई अन्य उपाय था भी नहीं। मेरे एक मित्र ने व्हाट्स–ऐप मैसेज में "you" की जगह "u "और "are" की जगह " r " लिखा। इसपर मैंने लिखा ''भाषा की शुद्धता पर ध्यान देनी



Scanned with AnyScanner

चाहिए। अगर हम ही गलत लिखेंगे तो बाल – बच्चे सही शब्द कैसे सीखेंगे। समाज में क्या संदेश जाएगा , हमें व्याकरण का ख्याल लिखते समय रखनी ही चाहिए। व्याकरण वह अनुशासन है जो भाषा पर लगाम लगता है। व्याकरण पर हमेशा ध्यान देनी चाहिए। ऐसा लिखना तुम्हें शोभा नहीं देता है। भविष्य मे इसपर ध्यान दो। अंग्रेजी के बड़े अक्षरों जो सोश्ल मीडिया पर आक्रोश और असभ्यता का प्रतीक है, में उन्होने लिखा –जमाना कहाँ से कहाँ चला गया और तुम लकीर के फकीर ही बने रह गए। अगर कम शब्दों मे कुछ कहा जाये और अगला इसे समझ जाये तो बुरा क्या है?''

आरा, मुंगेर समेत कई अक्षरों के लिखने के तरीकों मे जब बदलाव हुआ तो व्याकरण कहाँ था ? कम्प्युटर का जमाना है अमेरीकन इंगलिश चलता है Centre को Center लिखना बिलकुल गलत बात नहीं। लेकिन ये आधुनिकतम बातें तुम जैसे उज्जड, गँवार, ग्रामीण सोंच वालों के समझ के परे है। दरअसल मेरा यह मित्र मुंबई में रहता है और अपनी श्रेष्ठता के लिए छोटे शहरों मे रहने वाले मित्रों को ग्रामीण कहकर संबोधिति करता है। लॉक डाउन के फुर्सत वाले दिन मेरी यह इच्छा हुई इसे छेड़कर देखा जाए क्या प्रतिक्रिया देता है। मैंने लिखा कि तुम ठीक कहते हो जमाना बदल गया। आदिकाल मे लोग इशारों अथवा चित्रों से अपनी बात समझा देते थे, भाषा थी ही नहीं, जानवरों के लिए आज भी भाषा नहीं है । आज तुम आदिकाल वाला ही काम कर रहे हो की बात समझ में आनी चाहिए। भाषा पर जोर मत दो कथनी और करनी में विरोधाभास। लिखते हो आदिकाल वाला चित्रात्मक और कहते हो जमाना बदल गया। क्या इस बदले जमाने में ज्ञानार्जन करने की आवश्यकता नहीं रही ? अच्छी बात और आदतें की अहमियत नहीं रही। भाई मूलभूत सिद्धान्त कभी नहीं बदलते। अच्छाई और शुद्धत्ता शाश्वत है। आरा, मुंगेर के लिखने का तरीका अंग्रेजी में बदला है जिसकी ग्राह्यता हिन्दी के मुकाबले काफी कम है। अमेरिका तो अनुसंधान मे संस्कृत और भारतीय प्रतिभाओं का उपयोग कर रहा है। एक तुम हो अमेरीकन अंग्रेजी के दीवाने हुए जा रहे हो। अरे साफ साफ कहो कि भाषा एवं स्पेलिंग (हिज्जे) पर तुम्हारी पकड़ मजबूत नहीं है। मैंने उसे स्कूल की एक घटना भी सुनाई जो मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ।––– हम दोनों स्थानीय पटना हाइ स्कूल गर्दनीबाग के एक ही कक्षा के विद्यार्थी रहे है। गणित विषय के शिक्षक महोदय वर्ग मे प्रवेश करते ही किन्हीं ाँच छात्रों से अंग्रेजी के एक एक स्पेलिंग पूछते। पूछे जाने वाले शब्दों में डायरिया, पायरिया, कमिटी, क्यू जैसे ेलिष्ट शब्दों की ही प्रमुखता रहती। जिन छात्रों की स्पेलिंग गलत हो जाती उन्हें इस शब्द को एक विशेष बेंच ासकी दिशा ब्लेकबोर्ड के विपरीत दूसरे तरफ दीवार की ओर होती पर बैठ कर पचास बार लिखने की सजा लती। मेरे ये मित्र इस बेंच के स्थायी सदस्य थे। वर्ग समाप्त होने के बाद वह शेखी बघारता मुझे तो स्पेलिंग ती थी जान बुझकर गलत किया ताकि गणित के पेचीदगी भरे वर्ग से बच सकूँ। गुरुजी को इस बात की जब नकारी हुई तो उन्होने नई ब्यवस्था दी जिन विद्याथियों के स्पेलिंग गलत होंगे वो छुट्टी के बाद स्टाफ रूम मे ा होंगे तथा गलत हुए शब्द को साठ बार लिखेंगे, उनकी छुट्टी तभी हो पाएगी जब वे उस दिन की स्पेलिंग व



Scanned with AnyScanner

साथ साथ पिछले पिछले पाँच दिन के स्पेलिंग सही सही बता पाएंगे। उस दिन के बाद हमारे मित्र मंडली में
छुट्टी, निंधारित समय से एक सवा घंटे बाद होने लगी। इसके अतिरिक्त मैंने उसे यह भी याद दिलाया कि
होनेवाले पाक्षिक स्पेलिंग टेस्ट में उसका स्थान प्रायः नीचे से प्रथम रहता था। ग्रामीण सोच की बात का प्रयोग
भी यही उचित समय था। मैंने लिखा हमारे गाँव के कुछ लोग जब खेती बारी से निपट लेते है तो वे पार्ट
जॉब के लिए मुंबई जाते है और जब लौटते है तो तुम्हारी तरह ही बहकी बहकी बातें करते है क्या वहाँ के
मे ऐसा कुछ है ? मैंने उसे चिढाने के मकसद से सलाह दिया की किसी श्रमिक स्पेशल से गाँव लौट आओ
पूरे बदन मे कड़वा तेल मलकर किसी तालाब मे जमकर स्नान कर किसी छायादार पेड़ के नीचे पाँच छह घंटे
नींद लो , इससे तुम्हारा समस्त मनोविकार दूर हो जाएगा।

मुझे पूरी उम्मीद थी कि प्रतिक्रिया मे वह कॉल करेगा और अपनी भड़ांस निकलेगा । व्हाट्स ऐप मैसेज
पढ़ लेने का संकेत जब मैंने देख लिया तो मोबाइल स्विच ऑफ कर दिया। मोबाइल ऑन करने पर लाल पीला
डिसप्ले के नीचे लंबा चौड़ा मैसेज लिखा था। उन्होने सख्त लहजे मे लिखा था कि तुम्हारे व्हाट्स ऐप पोस्ट के
कारण स्कूल की घटना से उसकी पत्नी और बच्चे भी अवगत हो गए। क्या मेरी इज्जत घर में रह गई। बच्चों के
किस मुँह से पढ़ाई कि बात कहूँगा? इसका परिणाम के लिए तैयार रहना। बड़े विद्वान बनते हो। ये सनक उसकी
अप्रत्याशित नहीं थी। मैं यह जानता हूँ कि गर्दनीबाग मे रहने वालों के स्वभाव मे उग्रता रहती है। किम जोंग पे
सनक भरी बातें जब समाचार पत्रों मे आता तो हमलोगों मे इसकी चर्चा होती कि क्या ये लोग गर्दनीबाग में रहते हैं
ये तो यहाँ के वाशिंदे हैं कई पुश्तों से यहाँ के निवासी है उग्रता तो रहेगी ही। मैंने बिलकुल नरम लहजे में पोस्ट
किया सत्य की अनदेखी उचित नहीं। इस पोस्ट का कोई असर उसपर नहीं पड़ा ऊटपटाँग आक्रोश भरी बातें
पोस्ट करता रहा। उसका गुस्सा कम हो इसलिए बीच बीच में मैं लिखता रहा तुम्हारा विचार उत्तम है। उसने सनक
के साथ एक दिन लिखा कि वह प्रतिदिन तीन प्रश्न मुझसे करेगा। आगे लिखा तीन मे से दो का उत्तर सही नहीं
देने पर वह मुझे मूर्ख की उपाधि देगा। उन्होने बोल्ड अक्षरों मे लिखा – बोलो चुनौती कुबूल है। सही उत्तर नहीं
दूंगा इससे उसका गुस्सा शांत हो जाएगा इस विचार से कहा – कुबूल है देखें तुम्हारे प्रश्न मे कितना दम है।
लेख की शुरुआत मे आपके समक्ष रखा गया प्रश्न पहले दिन का पहला प्रश्न था। मैंने इसका उत्तर नहीं दिया और
लिख इसका समाधान मेरे पास नहीं। हाँ पुराने मित्रों के ग्रुप मे मैंने इसे पोस्ट कर दिया पूरे वृतांत के साथ। पोस्ट
करते ही व्हाट्स चैट जो हम दो के बीच सीमित था वृहत रूप ले लिया। हम सबों ने हम बस तुम छोटा के अंदाज में
अपने अधकचरे ज्ञान का बखान चैट के रूप मे करने लगे। लम्बे मैसेज के कारण गतिविधि मोबाइल से लैपटॉप
एवं कम्प्युटर पर स्थानांतरित हो गए। वस्तुतः ये चैट युद्ध है। जिस प्रकार वास्तविक युद्ध में विकास एवं कल्याण
मर खर्च की जानेवाली राशि में कटौती कर हथियार आदि खरीदे जाते हैं उसी तरह घर के बजट में कटौती क
महंगे रीचार्ज पैक खरीदे गए ताकि निर्बाध इंटरनेट मिलता रहे। मैसेज को असरदार करने में बाल बच्चों



Scanned with AnyScanner

पत्नी के विचार सहित तकनीकी सहयोग भी लिया जाने लगा। लॉक–डाउन अवधि की यह चैट युद्ध अनूठी एवं अभूतपूर्व है और जिसका पूर्व उदाहरण विरल है। ग्रुप के अंदर ग्रुप बन गए। मैसेज पड़ना उसका प्रत्युत्तर पोस्ट करना मुख्य काम हो गए। एक ने लिखा .01 सेकंड अर्थात 1 सेकंड का सौवाँ हिस्सा ये भारत से संबन्धित नहीं हो सकता इतनी सुक्ष्म समय का मापन क्या भारत में संभव है ? ये मित्र महोदय कुछ साल विदेश मे रहे हैं और तब से इनमें विदेशपना का भूत सवार हो गया है। विश्व की तमाम अच्छी बातें इन्हें विदेश की ही लगती है। मैंने सीधे उससे प्रश्न किया की क्या तुम्हारे घर मे पंचांग और गीता है ? पंचांग तो अब हिन्दी मे भी आने लगा है , कभी कभार इसे उलट लिया करो। प्राचीन भारतीय गणना पद्धति मे समय की सुक्ष्मतम इकाई त्रुटि है। एक त्रुटि $.3 \times 10^{-7}$ सेकंड के बराबर होता है। त्रुटि एक सेकंड का करीब करीब करोड़वां हिस्सा होता है। तुमको तो सौवाँ हिस्से पर ही संदेह है। अंधकूप से बाहर निकालो। एक दिन रात मे 86400 सेकंड होते है ये तो तुम जानते हो यह भी जान लो एक दिन रात मे 17496000000 त्रुटि होते है,। अब तुम्ही बताओ कौन उन्नत है भारतीय पद्धति या पाश्चात्य पद्धति। मैंने सुक्ष्म इकाई रेणु, लव, लीक्षक,लीरता, पल, विफल विघाती, नाड़ी, दंड, एवं मुहूर्त का विस्तार से वर्णन किया। उसने मुहूर्त एवं पल के संबंध मे विशेष जिज्ञासा की, शायद फिल्मी गाना पल पल दिल के पास अथवा मांगलिक कार्यों के लिए प्रयुक्त मुहूर्त शब्द के कारण। अरे भाई पल समय की इकाई है जो 24 सेकंड के बराबर होता है। गाने पर मत जाओ इससे गाना का भावार्थ ही बादल जाएगा। मैंने बताया की मुहूर्त समय भी समय की ही इकाई ही है पल से बड़ा। एक मुहूर्त मे 45–50 मिनट होते है। एक दिन रात 31 मुहूर्त के बराबर होता है। इसमे दो घटी होते है। यह सापेक्षिक होता है। सर्वविदित है कि हम सबों के मांगलिक कार्य शुभ मुहूर्त मे ही होते है। शुभ मुहूर्त की गणना सामान्य ज्योतिषीय जानकारी से की जा सकती है। समय के बड़े इकाई यथा युग, चतुरयुग, कल्प और मानवन्तरा की भी विशद व्याख्या कर उसके हरेक शंका का समाधान किया। .01 सेकंड की घटना विशुद्ध भारतीय घटना है। यह बात है सन 1984 के लॉस एंजिल्स ओलिम्पिक की है। भारतीय उड़नपरी पी०टी०उषा जो पय्योली एक्सप्रेस के नाम से विश्वप्रसिद्ध है की 400 मीटर हर्डल दौड़ में कांस्य पदक .01 सेकंड से छुट गया। यदि वह जीतती तो भारतीय इतिहास में ट्रैक एंड फील्ड का यह पहला पदक होता। हारने के बावजूद इस घटना ने जो सुर्खियां बटोरी और प्रभाव छोड़ा वह जीतने वाले को भी नसीब नहीं हुआ। हार का कारण समान्य रूप से खिलाड़ी खराब अंपाइरिंग, खराब मैदान, निम्न स्तर का उपकरण एवं प्रशिक्षण को ठहराते है। हार के बाद साक्षात्कार मे हार का कारण उड़नपरी द्वारा बताया गया वह असामान्य था। उसने बताया की दौड़ की पूर्व संध्या पर उसे अंचार और हलवा खाने के लिए मजबूर किया गया जिससे उसे दौड़ के अंतिम 25 मीटर मे पर्याप्त शक्ति नहीं मिल पायी। ईमानदारी के साथ बताया गया सत्य सरकार के लिए आँखें खोलने वाली थी। आज खेलों मे मिलने वाली बेशुमार सुविधाएं इसी ईमानदार स्वीरोक्ति का फल है। इन जोरदार तथ्यों के समक्ष वे निरुत्तर तो हो गए लेकिन हार नहीं मानी। व्यक्तिगत आक्षेप पर उतर गए। एक ने पोस्ट किया बड़ी बड़ी सैद्धांतिक बातें करना बड़ा ही आसान काम है। स्कूल में एक बार तुम्हारे आइस–क्रीम के लिए 25 पैसे मैंने जो दिये थे उसे लौटने की तो बात दूर रही इसकी



Scanned with AnyScanner

एक बार चर्चा तक नहीं की। यही है तुम्हारी नैतिकता। उसके इस पोस्ट से यह एहसास हो गया कि आखिर तो युद्ध है व्हाट्स ऐप युद्ध ही सही साम, दाम, दंड, भेद सबों का उपयोग तो होगा ही। मन में खटास तो हुयी लेकि इस जंग में मेरी स्थिति मजबूत थी और मैं मोर्चा छोड़ नहीं सकता था, मैंने लिखा कभी फुर्सत मे यह भी जोड़ घ कि मैंने भी क्या कभी तुमपर खर्च किए हैं? एक दो खर्चों की भी उसे याद दिलाई। जरा जोड़ घटाव करके देख किसका किसपर उधार है। मैंने उसे यह भी याद दिलाई कि जिस सप्ताह मे तुमने ये 25 पैसे खर्च किए थे सप्ताह मे दूसरे मुहल्ले के कुछ लड़कों के साथ तुमने मेरे क्वार्टर के परिसर के पेड़ से पूरे के पूरे आम चुरा लि और इल्जाम लगाए थे बेचारे रिक्शा वाले पर। क्या हालत हुई थे रिक्शे वाले कि। क्या उन आमों के मोल 25 से कम थे। क्या तुम्हें इस घटना पर पछतावा नहीं होता? क्यों इन घटनाओं को स्मरण दिलाकर पाप के भागी बनते हो। कुछ नहीं बदला है तुममे इन 30–35 वर्षों में। प्रत्युत्तर में उसने आँसू टपकाते स्मिल्ली का फोटो प किया । चलो ये भी किला फतह हुआ। मन में उत्साह का संचार हुआ। ध्यान से मेसेज पड़ने लगा। अगली किसकी खबर लूँ। एक पोस्ट मिला लिखा था ––– पलटू वाला मामला क्या पुण्य का था? पोस्ट के नीचे वृतांत अंकित था । पढ़कर मैं अपराधबोध से ग्रसित हो गया। चेहरा निस्तेज हो गया। मन मे कई तरह ऊटपटाँग विचार आने लगे। व्यक्ति था। मुहल्ले मे हमलोग बड़े ही धूमधाम से सरस्वती पूजा मनाते थे। पूजा पंडाल आकर्षक ढंग से सजाया जाता था। सजावट मे प्रत्येक घर से कपड़े विशेषकर साड़ी मांगा जाता। महिल साड़ी देने में बड़ी खिचखिच करती और कम चमकदार एवं पुरानी साड़ियाँ देती। इसमे समय और श्रम भी ल था और सजावट भी फिकी। एक साल निर्णय हुआ कि साड़ी नहीं मांगा जाएगा औए आस पड़ोस के घरों के दरवाजे में लगे रंग बिरंगे पर्दों से काम चलाया जाएगा। रात के अंधेरे मे सभी पर्दे को उतार लिए जाने का वि बना। हालांकि पूजा के बाद पर्दे संबन्धित घरों को लौटा दिये जाने का भी विचार बना। सरस्वती पूजा में सब हिस्सा लेने वाले जानते हैं कि पूजा के पूर्व कि रात रतजग्गा का होता है। मूर्ति लाना , सजाना आदि कामों लिए रात छोटी पड़ जाती है। शुभस्य शीघ्रम। छठे पहर (रात्री के 9:00 बजे से 12:00 बजे के बीच ) में ही लग 25 पर्दे का इंतजाम हमलोगों ने कर लिया। पास के ही तालाब मे पर्दे को अच्छी तरह से धो कर गीली अवस्था ही इसे पंडाल में आकर्षक ढंग से लगा दिया गया। सबों के चेहरे से खुशी झलक रही थी मानों कोई दुर्लभ उपल हासिल की हो। अगले दिन पूजा के बाद दोपहर तक पर्दे गायब होने और पंडाल में लगे होने की बात पूरे मुह में फैल गई लोगों ने पूछताछ शुरू की। पर्दे यहाँ आए कैसे ? ये तुमलोग पुजा करते हो या ––––––। उनलो का लहजा सख्त होता गया। रंग में भंग पड़ गया। बड़ा विकट स्थिति हो गई। बुरे काम का बुरा नतीज हमलोग एक दूसरे को चोर की निगाह से देख रहे थे।इधर कुआँ उधर खाई। एकाएक मन में एक विचार आया। आत्मविश्वास के साथ मैंने बोला ये सभी पर्दे हमलोगों ने पलटू से दो दिन के लिए किराए पर लिया है। प्रति पर्दे रुपये के हिसाब से चंदे के पैसे से उसे भुगतान किया गया है। धुलायी के नाम पर पैसे उन्होने एडवांस मे लिया है सभी पर्दे धुले हुये है आपलोग देख सकते हैं। पलटू रंगरेज मुहल्ले के लोगों के कपड़ों के धुलायी एवं रंग रोगन क



Scanned with AnyScanner

काम करने वाला एक विश्वसनीय व्यक्ति था। इस तरह झूठ से हमलोग साफ बच निकले। पलटू ने लाख सफाई दी लेकिन उसका असर लोगों पर बिलकुल नहीं हुआ। पूरे मुहल्ले की धुलायी का काम करने वालों की धुलायी मुहल्ले वालों ने कर दी। कुछ ने मामले को पुलिस मे देने का सुझाव दिया। कुछ समझदार लोगों के हस्तक्षेप से मामले का पटाक्षेप तो हो गया लेकिन उसकी रोजगार मुहल्ले से लगभग छिन गई। जब भी यह घटना स्मृति में आती है पलटू का चेहरा मेरी आखों के सामने छा जाता है, दिल बैठ जाता है और मन अशांत हो जाता है। इस घटना का उल्लेख कर मित्र ने मेरी दुखती रग पर प्रहार किया था। पत्नी और बच्चे ने पोस्ट पड़कर नाराजगी ही नहीं जताई बल्कि भला बुरा भी कहा और अपनेआप को इस व्हाट्स ऐप युद्ध से अलग कर लिया। पत्नी ने कहा यह प्रतिष्ठा हनन अभियान है या व्हाट्स ऐप युद्ध। जो भी हो आपलोगों का चाल चरित्र उजागर हो गया है। वह रंगरेज के परिवार का पता कर उसे आर्थिक मदद कर मेरे पाप का मोचन करने के बारे में सोचने लगी। हम सब विभीषण, जयचंद एवं मिरजाकर का अपने समकालीनों से मनभेद एवं इसके परिणाम से वाकिफ हैं लेकिन सूक्ष्म मनभेद जो हमारे आपके सबों के घर में है की चर्चा तक नहीं करते। ये सुक्ष्म मन भेद सरल और आसान काम को भी दुरूह और विकट कर देता है। इन सुक्ष्म मन भेदों के कारण कई घरों की प्रतिष्ठा, स्मृद्धि एवं भविष्य काल के गाल में समा जाते हैं। घर में उत्पन्न हुये मन भेद एवं मित्रों का एकजुट होकर मुझे टार्गेट करने की घटना से आहत होकर मैंने भी इस चैट हटने में ही अपनी भलाई समझी। लेकिन समय अनुकूल होते ही मैं फिर इसमे लौटूँगा और एक एक की खबर लूँगा अभी से ही किए जाने वाले पोस्ट एवं मित्रों की कमजोरियाँ का खाका बनाने में जुट गया हूँ। आपसी कलह वृतांत ने लेख को उबाऊ और लंबा कर दिया है एक घटना जिसका गहरा संबंध इस लेख के पात्रों से है उल्लेख के साथ मैं लेख का समापन करना चाहूँगा। कुछ वर्ष पूर्व की बात है सुबह की सैर के दौरान पास ही के तालाब से गुजरते हुये वहाँ की गतिविधि असामान्य लगी। दो चार लोग घाट की पहरेदारी करते नजर आए। मैंने जानबूझकर घाट की ओर रुख किया। जैसा की अंदेशा था, वहाँ खड़े लोगों ने मुझे ऐसा करने से रोका। उन्होने बताया कि एक नेताजी यहाँ जलसमाधि लेने वाले हैं। उन्हीं के आदेश से हमलोग यहाँ पहरेदारी कर रहें हैं। मन ही मन मैने सोचा कि जाते जाते भी लोगों को कष्ट दिये जा रहे हैं लगता है असली नेता हैं। मैंने व्यंग्य किया जाँघ भर भी पानी नहीं है यहाँ जलसमाधि कैसे लेंगे क्या अन्य विकल्प नेताजी के पास नहीं था? पास ही खड़े एक सज्जन ने कहा नौटंकी है ये दरअसल उनकी मंशा लोकप्रियता बड़ाना और सहानुभूति बटोरना है। क्या कोई ऐसा कायरतापूर्ण काम ढोल पीटकर करता है? पूरे मामले को जानने कि की इच्छा जगी। वहाँ मौजूद अन्य लोगों से बातचीत मे यह बात प्रकाश में आई कि जलसमाधि लेने वाले नेताजी हाल ही में हुए स्थानीय निकाय चुनाव मे बहुत ही कम अंतर से पराजित हुए हैं । पुनः गणना की माँग जिला प्रशासन द्वारा अस्वीकृत किए जाने के विरोध में वे ऐसा कर रहे हैं। मैंने भी टहलने का विचार त्याग थोड़ी ही दूर एक चबूतरे पर पेड़ की आड़ में बैठ गया। थोड़ी ही देर में नेताजी का पदार्पण हुआ। अरे पानी के अंदर शीशा, कीड़ा मकोड़ा आदि तो नहीं उन्होने रौबदार आवाज में पहरेदारी कर रहे व्यक्ति की ओर मुखातिब होते हुए पूछा। पूरी तरह से जाँच परख लिया है सब वैसा है



Scanned with AnyScanner

कर रखें है जैसा आपने बताया है, उस व्यक्ति ने जवाब दिया। नेताजी ने कहा एक बार फिर से सुन लो कहीं कोई गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए। जब मैं पानी मे प्रवेश करूंगा कोई आस पास नहीं रहेगा। जब मैं कुछ दूर पानी में चला जाऊँगा तो ये तीन लोग जो लगाना चाहिए की अपने काम से कहीं जा रहे हैं बचाने आएंगे। इसके बाद ये तीनों लोगों को जो बात कहेंगे उसे भी नेताजी ने अच्छी तरह से समझाया। नेताजी की योजना के अनुरूप घटना को अंजाम दिया गया। एक दो कार्यकर्ता घटना की रिकॉडिंग भी करते दिखे। पानी से बाहर आकार नेताजी ने भीगी ही अवस्था में कैमरे के सामने जोरदार भाषण दिया – मेरा जीवन जनता के लिए समर्पित है इन तीनों ने मुझे बचाया समाज की सेवा के लिए, हरेक अन्याय के लिए मैं आपसबों के लिए लड़ता .....। देर तक कार्यकर्ताओं की नारेबाजी होती रही। उन तीन व्यक्तियों का भी साक्षात्कार रेकॉर्ड किए गए । मीडिया मे न्यूज किस तरह से देना है के संबंध मे निदेश देकर नेताजी वहाँ से निकल गए विजयी मुस्कान के साथ। कालो कुटिलोरू गति अर्थात काल का चाल कुटिल होता है। नेताजी के विरोधियों उनकी इस हरकत का अधोपान्त वीडियों बना लिया। नेताजी की तथाकथित रूप से जान बचानेवाले वे तीन राहगीर भी विरोधी खेमे के ही निकले। घर घर वीडियों पहुंचाई गई, चौक चौरहों पर इसे चलाया गया। नेताजी कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहे। घर से निकालना तक उन्होने बंद कर दिया। ये नेताजी कोई और नहीं मेरे पहले मित्र महोदय ही थे। उस विकट समय में उसने कहा था ये सब कर्म का फल है मैंने जैसा किया वैसा पाया लेकिन मैं इस विपदा से बाहर निकालूँगा और समय को अपने अनुकूल करके दिखाऊँगा। आज वे एक सफल व्यवसायी हैं, उनका बड़ा कारोबार है । समाज मे इज्जत, प्रतिष्ठा, पैसा सब कुछ है उनके पास। उन्होने कर्मशक्ति से न सिर्फ अपने को विकट स्थिति से निकाला बल्कि काल के चाल को भी अपने अनुकूल कर लिया। कर्म के आगे काल की भी नहीं चलती है, यह उसने चरितार्थ कर दिखाया। हम और आप भी अपने कर्म को पवित्र और कल्याणकारी रखकर काल पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और इसे अपने अनुकूल कर सकते हैं। यदि हमारे कर्म उत्तम हों तो लोक परलोक की समस्त अच्छाइयाँ स्वमेय हमारे मातहत रहेंगे। हमे सदैव उत्तम कर्म के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।



Scanned with AnyScanner

प्रतिमा कुमारी
वरीय लेखाकार

लेखनी तेरी सफर अनमोल,
लिपि तेरी जान, शब्द है अरमान।
भाव-भावनाओं का पहने हार,
काल को समेट कर में अपने,
रुप-लावण्य से करती सराबोर।
इतिहास को तूने पन्नों में पिरोये,
सभ्यता से करायी सबकी पहचान।
ऋषि-मुनियों के वचनों की संरक्षिका,
तू जननी धरा की धरोहर।
आये-गये शासकों की गाथा गाती,
कर्मपथ पर अडिग सदैव।
घबराती नहीं झंझावातों से,
अनुपम-अनूठा तेरा सौन्दर्य।



Scanned with AnyScanner

संजीत कुमार
एम० टी० एस०

# बूढ़े माता-पिता के उनके अधिकार मत छीनिए

प्रायः सभी माता-पिता बच्चों के लिए हर प्रकार के समझौता करने को तैयार रहते हैं पर उनके बच्चे अपने माता पिता के लिए बुढ़ापे में उनके लिए कोई समझौता करने को तैयार नहीं होते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बुढ़े माता-पिता की सेवा तो नहीं कर सकते लेकिन उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक तंगी नहीं होने देते। ये लोग उन लोगों से कुछ बेहतर हैं जिनके माता-पिता दाने-दाने के लिए मोहताज हो जाते हैं। लेकिन बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना भी तो बच्चों का फर्ज है। हम सब को अपने फर्ज से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। कुछ ऐसे भी हैं जो कभी अपने बूढ़े माता-पिता को पूछते नहीं, लेकिन मदर्स डे और फादर्स डे उपहार भिजवाना नहीं भूलते। उन्हें महँगे उपहार की आवश्यकता नहीं, बल्कि उन्हें उनकी देखभाल और प्यार की जरुरत है। उन्हें जरुरत है तो बच्चों के साथ की, केवल पोते-पोतियों के साथ की। अगर उन्हें इन सब का साथ मिलेगा तो देखभाल की जरुरत भी नहीं होगी। परिवार का अभाव ही उनके दुःख का कारण है। अकेले परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार में रहने वाले माता-पिता और उनके बच्चे अधिक स्वस्थ और खुश रहते हैं। साथ रहना सुरक्षित ही नहीं, अच्छे स्वास्थ्य का मूल कारण है। कुछ लोग साथ रहते हैं सिर्फ दिखावा करते हैं। उन्हें दिखावे के प्यार की जरुरत नहीं है। उन्हें जरुरत है आदर-सम्मान और पूर्णरुपेण अपनेपन की। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने बच्चों को दादा-दादी के पास जाने भी नहीं देते। अगर वे अपने पोते-पोतियों के साथ मिल कर रहेंगे उन्हें बहुत खुशी महसुस होगी। अगर हम अपने बूढ़े माता-पिता को खुश और स्वस्थ देखना चाहते हैं तो हमें उनकी सेवा करनी चाहिए। अपने बच्चों का संसार उनसे मत छीनिए

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के उद्घाटन के अवसर पर माननीय प्रधान महालेखाकार दीप प्रज्जवलित करते हुए।

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के उद्घाटन के अवसर पर माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

Scanned with AnyScanner

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के उद्घाटन के अवसर पर वरीय उप महालेखाकार महोदय दीप प्रज्जवलित करते हुए।

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के उद्घाटन समारोह के अवसर पर वरीय उप महालेखाकार महोदय स्वागत भाषण देते हुए।

Scanned with AnyScanner

स्वतंत्रा दिवस-2020 के शुभ अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय व0 उ0 म0 ले0 महोदय एवं उ0 म0 ले0 महोदयगण।

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के उद्घाटन के शुभ अवसर पर उ0 म0 ले0 महोदय।

Scanned with AnyScanner

हिन्दी दिवस-2020 के सुअवसर पर कार्यालय के अधिकारीगण कार्यक्रम का आनंद लेते हुए।

हिन्दी दिवस-2020 के सुअवसर पर श्री शिवशंकर उ० म० ले० महोदय गृह मंत्री के संदेश का वाचन करते हुए।

Scanned with AnyScanner

चंदन कुमार
लेखाकार

# फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था।

फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था।
बेटी का रिश्ता तय कर दुखी भी था।
जिस बात से कल तक परेशान थे।
वो आज भी ये सोच के हैरान है।
कि कल तक जोड़ तोड़ में लगे थे।
शादी कैसे भी हो जाये इस बात पे अड़े थे।
आज दोनों पक्षो में बात बन गई।
अरसों की मेहनत रंग ला गई।

फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था।

आज घोर दुःख इस बात का है।
कि अपनी ही बिटिया किसी और का है।
शायद दिल की धड़कनें भी थम सी गई है।
आज पिता की खुराक भी कम सी गई है।
जिस बेटी को इतना लाड़ प्यार दिया।
उसे ही किसी के कदमों में हार लिया।
हृदय में पिता के मचा घमासान है।
फिर भी चेहरे पे एक अज़ब मुस्कान है।

फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था।

बेटी भी पिता की मज़बूरी को समझती है।
"मैं छोड़ के न जाऊंगी" ये कह कर झगड़ती है।
जिनके होने से घर में चहल पहल थी।
पिता की झोपड़ी भी राजमहल थी।
बेटी सबके ख़ुशी के आगे रो नहीं सकती।
किसी अनजान के लिए उस पिता को खो नहीं सकती।
बेटी ने पिता के आज फिर से पाँव दबाए।
पिता ये देख बेटी को ख़ुशी से गले लगाये।

फिर भी वो पिता आज खुश नहीं था।।



Scanned with AnyScanner

देव प्रकाश केशरी
वरीय लेखाकार



कुछ समय पहले की बात है, मेरे पैतृक गृह टिकारी में दिलीप नाम का एक व्यक्ति रहता था। वो जाति से मोची था। वह स्नातक पास था, परंतु बेरोजगारी के अभाव में मोची का काम करने को दिलीप बड़ी तसल्ली से लोगों के जूते-चप्पलों की मरम्मत करता था।

आस-पास के इलाकों में एक मात्र मोची होने के कारण उसके पास काम की कोई कमी नहीं रहती दूर-दूर से लोग अपने फटे-चीथड़े जूते-चप्पल बनवाने पहुँचते। दिलीप भी बड़ी लगन से अपने ग्राहकों को समय देता और उनका काम पूरा कर देता। पर इन सबके बीच वह अपने ही पुराने हो रहे जूतों की ओर ध्यान नहीं देता।

समय बीतता गया... दिलीप दुनिया भर के जूतों को चमकाता रहा और उसके अपने जूते घिसते-घिसते खराब होते रहे। कुछ लोग उसे जूतों के लिए टोकते भी पर वो हर बार यही कह के टाल देता कि - पहले ग्राहकों के जूते तो बना लूँ फिर अपने भी बना लूँगा। करते-करते जूते इतने खराब हो गए कि अब वे उसके पैरों को तकलीफ देने लगे। ध्यान ना देने के कारण दिलीप के पैरों में घाव भी हो गया। जब लोग उसे इसके लिए कुछ बोलते तो वह कहता- अरे बस हलकी सी चोट है, ठीक हो जायेगी आप चिंता ना करें। लापरवाही के कारण कुछ महीनों बाद दिलीप के पैर में इतने घाव हो गए कि वो लंगड़ा-लंगड़ा कर चलने लगा। असहनीय पीड़ा होने पर लोग उसे शहर के अस्पताल ले गए। पता चला कि दिलीप महीनों पहले शुरू हुआ एक छोटा सा घाव अब नासूर बन चुका है। डॉक्टर्स के पास कोई विकल्प नहीं था, उन्हें दिलीप का एक पैर घुटने के नीचे से काटना पड़ा। इस घटना से पहुंचे आघात के कारण दिलीप कभी भी अपने काम पर नहीं लौटा और आज उसकी वजह से पूरा इलाका फटे-पुराने जूते चप्पल पहनने को मजबूर था।

क्या आप अपने परिवार या किसी और चीज का ध्यान रखने में इतने व्यस्त हैं कि खुद का ख्याल ही नहीं रखते?

मैंने देखा है कि अक्सर माँएं ऐसा करती हैं, वे अपने बच्चों... अपने परिवार की खूब देखभाल करती हैं, पर खुद के खान-पान और सेहत पर ध्यान ही नहीं देतीं। वे घर के हर एक सदस्य के लिए गरमा-गरम दूध लेकर पहुँच जाती हैं, पर खुद दूध नहीं पीतीं।

ऐसा करना एक पल के लिए आपको अच्छा एहसास दे सकता है कि आप बिना स्वार्थ के अपनों के लिए त्याग कर रहे हैं, लेकिन लंबे समय में, ये ना आपके लिए सही है ना आपके परिजनों के लिए।

**आप ठीक रहेंगे तभी और सब भी ठीक रहेगा।**



Scanned with AnyScanner

बिधु शेखर
लिपिक

## भोला की जटाओं में

भोला की जटाओं में है गंगा की रवानी,
हँसिये सा चाँद साजता भोला की परेशानी।

भोला के गले नील पड़े जहर रुहानी,
साँपों ने ढांक रखी है भोला की जवानी।

भोला की गिरस्ती में फटेहाल है जोगी,
ज्वर न जर न जाँत बसर किस तरह होगी।

भोला में ऐसा क्या है महादेव है कैसे,
कुछ समझ न आए वे बड़े देव हैं कैसे।

जो जहर पी सके बड़ी शाइस्तगी के साथ,
उसके अदब में झुक गए सारे अदब के साथ।

## शिव

वीरेश्वर अविनाशी हैं शिव,
उमापति कैलाशी हैं शिव।
मरघट संन्यासी हैं शिव,
घट औघट के वासी हैं शिव।

अघ भोला भंडारी हैं शिव,
भूतेश्वर त्रिपुरारी हैं शिव।
मन्मय मदन संहारी हैं शिव,
सति के पति दुःख हारी हैं शिव।

दक्ष यज्ञ मर्दन मगनश
कंठ हलाहल कूट।
आशुतोष की लूट है
लूट सके तो लूट।



Scanned with AnyScanner

देव प्रकाश केशरी
वरीय लेखाकार

# विश्वासघात

जब मै दिल्ली में लिपिक के पद पर पस्थापित था, उस समय मेरे एक परिचित की बेटी डिम्पल (काल्पनिक नाम) की कहानी है.....

"माँ" मैं सोच रही थी! कि आज रात को मैं आलिया के घर पर ही रुक जाऊंगी...थोडी कम्बाइन्ड स्टडी करनी है, वो परसों कमेस्ट्री का टेस्ट है ना उसी की तैयारी करनी है। किताबें समेटते हुए डिम्पल बोलती जा रही थी।

"पर बेटा...रात को... किसी के घर रुकना मुझे तो ठीक नहीं लगता।" "माँ", नाराज होती हुई डिम्पल ने कहा "देखो ना पापा माँ जाने नहीं दे रहीं। पापा माँ पर नाराज़ होते हुए बोले, "अरे रुक जाने दो ना डिम्पल को उसकी सहेली के घर, एक रात की ही तो बात है। अपने बच्चों पर विश्वास करना सीखो!, जाओ बेटा जाओ!"

डिम्पल ने पापा को थैंक्स कहा और अपनी स्कूटी से निकल गयी। रात का एक बजा था, फोन की घनघनाहट सुन कर अरोड़ा जी घबरा कर उठे, फोन पर आवाज आयी, "मि. अरोड़ा आप तुरन्त थाना गांधी नगर आने का कष्ट करें।"

यह सुनकर अरोड़ा जी की सांसें गले में अटक गयीं, डर रहे थे की कहीं कोई अनहोनी ना हुई हो...कहीं बेटी को तो कुछ... बदहवास थाने पहुंचे, देखा दस-पंद्रह लड़के-लड़कियां मुंह छिपाये बैठे थे, उनमें अपनी डिम्पल को पहचानने में जरा भी देर नहीं लगी।

"देखिये अरोड़ा जी, ये बच्चे दिल्ली के बाहर एक फार्म हाउस में ड्रग्स के साथ रेव पार्टी करते हुए पकडे गए हैं।

आप लोग ना जाने अपने बच्चों को कैसे संस्कार देते हैं....ना जाने इतनी रात गए घर से बाहर निकलने का परमिशन कैसे दे देते हैं आप लोग....शर्म आनी चाहिए।

अरोड़ा जी का सिर शर्म से झुका जा रहा था, वो बस एक ही बात सोच रहे थे....जब उन्होंने अपनी बेटी पर इतना विश्वास किया तो आखिर क्यों उनकी बेटी ने उनके साथ विश्वासघात कर दिया!

**दोस्तों, इस दुनिया में कोई है जो आपका सबसे अधिक ध्यान रखता है, सबसे अधिक आपका भला चाहता है.... तो वो आपके माता-पिता हैं। वो आपको ऊपर से सख्त लग सकते हैं पर उनके भीतर आपके लिए अथाह प्रेम होता है और कभी भी आपको उस प्रेम का नाजायज़ फायदा नहीं उठाना चाहिए।**



Scanned with AnyScanner

अर्चना
वरीय लेखाकार

शांत चित्त में जहाँ भर की शोर लिए बैठा है
ढलती आँखों में जिंदगी की भोर लिए बैठा है
बचपन से बुढ़ापे तक की दौड़ किए बैठा है
जद्दोजहद में खुद को झकझोर दिए बैठा है
उलझनो के कई  तोड़ लिए बैठा है
मिलते बिछड़ते अपनों के कई ठौर लिए बैठा है
महफिलें सजा कर तन्हाइयों से गठजोड़ किए बैठा है
रिश्तों के मीठे कड़वे घोल पिए बैठा है
प्रेम लुटा कर कड़वाहटों के मोल किए बैठा है
नम आंखों में घाव घनघोर लिए बैठा है
सांसो की डोर कमजोर लिए बैठा है
सूखे पत्तों-सा हवाओं पे हक छोड़ दिए बैठा है
सपने और हकीकत की कड़ी जोड़ लिए बैठा है
चाँदनी रातें कहाँ अब अमावस की चोर बने बैठा है
झुकती थी जिसकी शान में नजरें, अब अपनी ओर किए बैठा है
ख्वाहिशें पूरी कर अपनों की अब उनसे उम्मीदें थोड़ किए बैठा है
इस छोर से उस छोर लिए बैठा है
हां जिंदगी की वह निचोड़ लिए बैठा है |



Scanned with AnyScanner

मो० शादाब
बारा मो० आफताब अंसारी
वरीय लेखाकार



खड़े-खड़े मुसकाते पेड़।
कहीं न आते-जाते पेड़।।

जंगल हो या तड़क-भड़क हो।
पर्वत-घाटी खुली सड़क हो।।
या बिजली की तेज कड़क हो।
किंतु नहीं घबराते पेड़।।
सैनिक से डट जाते पेड़।।
हरे गुलाबी गहने पहने।
सीख गए सब आतप सहने।।
इनकी मस्ती के क्या कहने।
खिलना हमें सिखाते पेड़।।
सुंदर दृश्य दिखाते पेड़।।

कई तरह के फल उपजाते।
खुशबूवाले फूल खिलाते ।।
लेकिन थोड़ा सा झूक जाते।
सज्जनता के नाते पेड़।।
फूले नहीं समाते पेड़।।

कड़ी धूप में बनते साया।
सारा जीवन सरस बनाया।।
पेड़ों की है अदभुत साया।
पहले वर्षा लाते पेड़।।
फिर छतरी बन जाते पेड़।।



Scanned with AnyScanner

गीता के रिश्ते टूट गए। उसके आँखों में आंसू ही आंसू थे। गीता के रिश्ता टूटने का रण पैसा था। वह सरकारी सेवा में कार्यरत थी। पढ़ने के दौरान ही उसे राज से प्यार हो था। राज भी पढ़ाई करता था। समय बीतता गया। राज को सरकारी नौकरी मिल गई। दोनों बीच पहले जैसा अब भी बात–चीत होती थी। नौकरी मिलने के पश्चात राज दूसरे राज्य में करी करने चला गया। कार्यालय में जब छुट्टी होती थी तो वह घर आता था। समय समय लम्बी छुट्टी लेकर भी वह घर आता था। अब राज के घर वाले शादी करने के लिए उस पर ाव बनाने लगे। जहाँ तहाँ से शादी का प्रस्ताव भी आने लगा। परन्तु वह शादी करने के ए तैयार नहीं होता था। घर वाले जब उस पर ज्यादा दवाब बनाने लगे तब वह बोला की वह ता से बेहद प्यार करता है और उसी से शादी करना चाहता है। परन्तु उसके घर वाले तैयार ं हुए। धीरे–धीरे एक दिन गीता के परिवार वाले को भी उसके प्यार के बारे में पता चल ा। गीता को घर में बहुत खरी–खोटी सुनाया गया। और साथ ही उसे राज से लने–जुलने एवं बात करने पर भी रोक लगा दी गई। फिर भी वह नहीं मानी। अंत में गीता घर वालों ने उसके साथ मार–पीट की एवं उसका मोबाईल भी छीन लिया। इसका पता जब ा को लगा तो वह गीता के घर संदेश भिजवाया कि वह उससे शादी करने के लिए तैयार अतएव उसके साथ मार–पीट नहीं की जाए। गीता के परिवार वाले राज के परिवार वाले से लने गए। दोनों परिवार शादी के लिए तैयार भी हो गए। गीता को देखने के लिए कुछ लोग ु जिसमें राज का बड़ा भाई भी शामिल था। सब कुछ ठीक हो गया। गीता के पिता को श भिजवाया गया कि फलाने दिन फलदान करने के लिए मेरे घर सपरिवार उपस्थित हो ुँ। गीता के घर में तैयारी शुरु हो गई। अचानक फलदान के दिन शाम में लड़की वालों को ा गया कि पहले दहेज का पूरा पैसा पहुँचाया जाए। उसके बाद ही रस्म रिवाज शुरु किया ुगा। पैसा नहीं पहुँचाने पर रिश्ता टुट जाएगा। गीता बहुत गिड़गिड़ाई, आँसू बहाई पर ा नहीं माना और रिश्ता तोड़ दिया। लड़की वालों के पास उतना पैसा नहीं था, जितना ने मांग की गई थी। इस तरह गीता के सारे सपने टुट कर मोती की तरह बिखर गये और ा को जहाँ सबसे ज्यादा दहेज मिला, वहाँ वह शादी करके अपने प्यार को यों ही ठुकरा ा।



Scanned with AnyScanner

पूर्णेन्दु कुमार झा
द्वारा- अविनाश ठाकुर, स० ले० अ०



ज़िन्दगी की राह को रोकते क्यों आज भी?
राहबंदी देश की, दंभ में क्या नाज़ भी?
राज पाके शान से, क्यों गिराते गाज भी?
राह खोलें आन की, बंद से क्या राज़ भी?
नीति देते राज की, देश पे क्यों गाज भी?
लूट खाएँ देश को, नीति से क्या राज़ भी?
मौन राही रोक से, फ़िक्र आगे गाज की।
गाज से क्यों राज़ भी, राज़ से क्यों गाज भी?
राह रोकी देश की, लूट का क्या राज़ भी?
लाज खोते ताज भी, राज़ कैसा आज़ भी?
बेबसी की जिन्दगी ठोकरें खा जी रही।
न्याय क्यों ना राज़ से, उम्र बीती जा रही।
जू- ब- जू हों देश में, राज से खुशबू सही।
हिन्द मंदीराज में, नीति की क्या बू अभी ?



Scanned with AnyScanner

पिंकी कुमारी
स० ले० अ० तदर्थ

सपनों की एक अलग ही दुनिया होती है। किसी सपने की वजह को तलाशा जाये तो वो मानवीय समझ के परे होता है। कभी वो आपके आसपास के घटनाक्रम पर आधारित हो सकता है, तो कभी इसके परे। कभी वो आपको अलौकिक क्षमता प्रदान कर सकता है तो कभी आपको अपने अधीनस्थ योग्यता के इस्तेमाल से भी वंचित करता है। मैं आपको अपने एक ऐसे सपने के बारे मे बताती हूँ जिसे याद कर के आज भी बड़ा असंतोष होता है।

एक तरफ मैं हूँ, दूसरी तरफ एक ऐसा इंसान जिस से मेरी खींचातानी है।

परिदृश्य कुछ ऐसा है कि वो अच्छा इंसान नहीं है, और उसके इरादे नेक नहीं हैं। और उसके गलत हरकतों की बस मुझे जानकारी है। मैं उसके आचरण से लोगों को परिचित करवाना चाहती हूँ और उसे पकड़वाना भी। इसके वजह से मैं उसके पीछे भाग रही हूँ। पर मेरे पैर तेज नहीं चल रहे और वो दूर जा रहा है। अचानक से वो एक बड़े से घर के अंदर चला जाता है, जैसे ही मैं उस घर के दरवाजे के पास जाती हूँ मैं देखती हूँ कि वहाँ कोई दरवाजा नहीं है। दरवाजा अभी वहीं था जिस से वो व्यक्ति अंदर प्रवेश किया था पर मेरे पहुँचते ही वो दरवाजा गायब हो गया (सपना है, तर्क न ढूंढें)। शीशे से मैं देख पा रही हूँ कि अंदर एक समारोह चल रहा है जिसमें काफी गणमान्य लोग हैं और वो व्यक्ति भी उनके बीच है। वो खतरनाक हो सकता है वहाँ पर। मैं हर कोशिश कर रही हूँ पर मुझे दरवाजा नहीं मिल रहा। फिर मैं जैसे तैसे खिड़की से अंदर जाती हूँ। चिल्ला कर ये बताने का प्रयास करती हूँ की उस इंसान की असलियत क्या है, पर अब नयी परेशानी आ जाती है की मेरे मुख से आवाज नहीं निकल रही। या शायद निकल रही पर लोग सुन नहीं पा रहे। मैं सब के पास जाकर बताना चाह रही हूँ पर कोई समझ नहीं पा रहा।

इसी बेचैनी में मेरी नींद खुल जाती है। मैं परेशान थी इस अधूरे सपने की वजह से इसीलिए मैं फिर सोने का प्रयास करती हूँ इस उम्मीद में कि मैं उस सपने को पूरा करूंगी और इस बार उस इंसान की असलियत से सब को वाकिफ कराउंगी। नींद आ भी जाती है और सपना फिर से शुरू होता है, वहीं से। लेकिन इस बार भूमिका में अदला-बदली हो गयी। मेरे जगह पर वो इंसान आ गया और उसके



Scanned with AnyScanner

जगह पर मैं। बड़ी राहत हुई कि इस बार मैं फायदे में हूँ। पर सपने बुनने वाले ने इस बार फिर
अच्छा नहीं सोचा। वो बोल भी सकता था और सब लोग समझ भी सकते थे। उसने सबको
और सब अचानक से मेरे खिलाफ हो गए। मैं कुछ बोल पाती उस से पहले सब मेरे पीछे भागने
दौड़ने लगी और लोग मेरे पीछे। फिर से इस बार उनकी चाल मेरे से ज्यादा तेज थी। भागम
बीच अवचेतन मन इस बात से वाकिफ था कि ये एक सपना है, क्यूंकि मैं उठकर दोबारा
इसीलिए मैं बहुत प्रयास करने लगी लोगों के पकड़ में आने से पहले नींद से जागने की। अंत में
खुली तो उठ कर बैठ गयी। विचलित मन था, सहमी हुई थी। ये सब एक सपना था, इस बात
किए बिना बदकिस्मती को मन में दोष दे रही थी कि कुछ भी मेरे पक्ष में न हुआ।

Scanned with AnyScanner

स्वाति सौरभ
सुपुत्री श्री उमेश चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी

# बाढ़ की विभिषिका

भारत के अनेक राज्य हर साल बाढ़ से प्रभावित होते हैं। ऐसे में हमेशा से सभी के मन में एक खयाल उठता है कि क्या इसे रोकने के लिए कोई भी उपाय कारगर नहीं है, हर बार सरकार नाकाम कैसे हो जाती है, तटबंध टूटने के लिए जिम्मेदार कौन है या फिर हम सभी को यह मान लेना चाहिए कि इतने जतन के बावजूद प्रकृति के इस प्रकोप से बचा नहीं जा सकता है। इन सवालों के जवाब तो किसी के पास नहीं होता।

वर्षा ऋतु में जब बहुत अधिक वर्षा होती है तो नदियों में जल की मात्रा बढ़ जाती है और तब बाढ़ की समस्या उत्पन्न होनी लगती है। यह एक आपदा है। नदियों में पानी की मात्रा इतनी बढ़ जाती है कि आस-पास के इलाकों में पानी भर जाता है। भारत में बिहार, गुजरात, असम, आन्ध्र प्रदेश, उत्तराखंड आदि में बाढ़ का ज्यादा असर देखने और सुनने को मिलता है। बाढ़ आने की स्थिति में नदियों के किनारे रहनेवाले लोगों की जिन्दगी के लिए यह बहुत बड़ा खतरा हो जाता है। लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। वैसे देखा जाए तो अत्यधिक बारिश के साथ-साथ उचित जल निकासी की व्यवस्था में कमी के कारण भी बाढ़ आती है। कभी-कभी भारी बारिश से बांध टूट जाता है और आस-पास के इलाकों में बहुत ही कम समय में पानी भर जाता है। अचानक से आई यह बाढ़ लोगों को संभलने का भी मौका नहीं देती है। ऐसे हालात में स्थिति घातक हो जाता है। भारी बारिश से बांध टूट जाता है और आस-पास का इलाका पानी से इतना भर जाता है कि कमजोर मकान गिरने लगते हैं, लोगों के घरों में पानी घुस जाता है, जिससे लोगों को छतों या फिर किसी ऊँचे स्थानों पर रहन पड़ता है। ऐसी स्थिति में उन्हें काफी पेरशानियों का सामना करना पड़ता है। जैसे- जान-माल की हानि, खाने-पीने की समस्या, पहनने-ओढ़ने की समस्या, रहने की समस्य आदि। इन समस्याओं के साथ-साथ जमलमाव के कारण अनेक प्रकार की बिमारियाँ फैलत हैं। महामारी जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे क्षेत्रों में टाइफाइड, हैजा, डेंगू, गंदे पान के कारण त्वचा रोग जैसी बीमारियां फैलने लगती हैं। जलजमाव और गन्दगी के कारण मच्छ और तिलचट्टों की संख्या इतनी बढ़ जाती है कि इस महामारी में लोगों के पास जो भ खाने-पीने का सामान होता है वो भी खराब होने लगता है। खास कर पीने का पानी प्रदूषि होने लगता है। गांवों में तो कई-कई दिनों तक चापाकल भी बाढ़ के पानी में डूबे रहते जिससे लोगों को पीने की पानी की समस्या हो जाती है। इसलिए कहा जाता है कि बा प्रभावित इलाकों के लोगों को पानी हमेशा उबालकर पीना चाहिए और खाना कभी बासी न बल्कि ताजा खाना चाहिए। ऐसे हालातों में बच्चों तथा बूढ़ों का खास खयाल रखने की जरुर



Scanned with AnyScanner

होती है।

जहां एक ओर पूरा देश कोरोना से जंग लड़ रहा है, वहीं दुसरी ओर भारत के कई राज्यों में लोगों को बाढ़ का भी सामना करना पड़ रहा है। खास कर बिहार, असम, गुजरात, उत्तराखंड आदि राज्यों में बाढ़ ने कोहराम मचा रखा है। भारत में कोरोना का संक्रमण भी तेजी से फैल रहा है और इसी के साथ-साथ अब बाढ़ भी लोगों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है। इस कोरोना काल में सरकार के लिए बाढ़ प्रभावित इलाकों में राहत कार्य चलाना बहुत ही चुनौतिपूर्ण है। सरकार को सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क, सैनिटाइजेशन आदि का खयाल रखते हुए बाढ़ प्रभावित लोगों को इस समस्या से बाहर निकालना है। सरकार द्वारा राहत कार्य तो चलाया जा ही रहा है, परन्तु बाढ़ से लोगों के जान-माल की जो हानि हुई है उसे कोई पूरा नहीं कर सकता। बाढ़ के कारण कई लोगों के घर टूट गए, जिससे कुछ बेघर हो गए तो कुछ लोगों के जानवर डूब के मर गए। राहत शिविरों की व्यवस्था तो की गई है, उसके साथ-साथ सैनिटाईजेशन का भी खास खयाल रखा जा रहा है, ताकि संक्रमण की कड़ी को पीड़ितों तक न पहुँच पाए।

इस प्राकृतिक आपदा में जहां एक तरफ इन्सानों को रहने, खाने-पीने आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ इन समस्याओं से जानवर भी अछूते नहीं है। बाढ़ जानवरों के लिए काफी संकट पैदा करती है। बाढ़ ने असम में भयंकर कोहराम मचाया है। यहां के काजीरंगा नेशनल पार्क का आधा से ज्यादा हिस्सा बाढ़ में डूब चुका है। यहां कई जानवरों की मौत हो चुकी है। लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। बाढ़ से फसल भी पूरी तरह खराब हो जाते हैं और साथ- साथ सड़क, पुल, रेल मार्ग भी पूरी तरह ध्वस्त हो जाते हैं। वहीं बिहार में भी बाढ़ का कहर जारी है। यहां तो हालात यह है कि रिहायसी इलाकों में भी बाढ़ का पानी घुस चुका है। यहां सैकड़ों गांव डूब गए हैं। जिससे लोग पलायन करने के लिए मजबूर हो गए हैं। नेपाल से बांध का पानी खोले जाने से या तटबंध के टूट जाने से बिहार की हालात और खराब होती जा रही है।

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, परन्तु इस पर सरकार की नाकामियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। जहां हर वर्ष बाढ़ आती है, तो सरकार इन सब से कुछ सीखती क्यों नहीं। नेपाल में भारी बारिश होता है और वहां का पानी बिहार में आता है, जो कोसी नदी में मिलता है। कोसी पर बना हुआ तटबंध हर साल टूटता है। राहत पहुंचाने और पुनर्वास के नाम पर हमेशा लूट मचता है। नेताओं, ठेकेदारों और बिचौलियों के लिए यह पैसा कमाने का धंधा बन गया है। जब तक भ्रष्टाचार को सरकार अनदेखी करती रहेगी तब तक ऐसी स्थिति से लोगों को सामना करते हरना पड़ेगा।



Scanned with AnyScanner

वैसे तो बाढ़ आने के बाद सरकार पीड़ितों के लिए पुनर्वास, राहत शिविरों की व्यवस्था करती है। एन0डी0आर0एफ0 तथा एस0डी0आर0एफ0 की टीमों को तैनात किया जाता है, जो तेजी से राहत पहुंचाने का काम करती है। सरकार प्रभावित परिवारों को नकद, कपड़ा खाने-पीने का सामान आदि भी पहुंचाने में मदद करती है। इसके अलावा फसल खराब हो जाने, मकान डूब जाने पर भी सहायता प्रदान की जाती है।



Scanned with AnyScanner

श्रेष्ठा प्रभाकर
सुपुत्री- श्री उदय नारायण प्रभाकर
वरीय लेखाकार



नमन है उन माँओं को जिन्होंने ऐसे पूत दिए
अपने आँख के तारों को भारत माँ के चरणों में है सौंप दिए
भारत माँ की चुनरी भी अब शान से लहराई है
अपने वीर सपूतों के लिए एक संदेशा लाई है।

हे भारत के वीरों तुम तो हो बलिदानी
आँख उठाकर भी जो देखे दो जवाब उन्हीं की जुबानी
सत्य–अहिंसा के पुजारी बनकर ले ली है आजादी
विश्व–पटल पर भारतवर्ष ने छोड़ दी है अपनी निशानी।

चारों ओर नाम गुंजता है भारत का
महावीर, बुद्ध ने जहाँ है पग धरा
जय–जयकार हुई भारत की इन महावीरों के कार्यों से
पवित्र हुई है यह धरा, राम–कृष्ण के नामों से।

श पर कुर्बान हो, देश से ही प्यार हो
से वीरों के जुनूं पर भारत माँ को वीरों पर भी नाज हो
ल में अब एक ही तमन्ना है, अपने संकल्प को पूरा करना है
रत माँ की रक्षा में खुद को न्योछावर करना है।।



Scanned with AnyScanner

अग्रिता प्रभाकर
सुपुत्री- श्री उदय नारायण प्रभाकर
वरीय लेखाकार

# एक श्रद्धांजलि
## स्वतंत्रता सेनानियों के नाम

परतंत्रता से जुझ कर,
अग्नि के पथ पर चलकर,
स्वतंत्रता के मार्ग पर बढ़ने की जब चाह जगी,
आजादी की चाह से ही तब उसे पाने की राह बनी।

कुर्बान हो गए हजारों–लाखों के घर,
नींव रख गए एकता की मगर,
हँसते–हँसते छोड़ दिए भगत सिंह ने अपनी जान,
लड़ते–लड़ते रानी लक्ष्मी बाई ने भी त्याग दिए अपने प्राण।

अनेक सपूतों ने प्राप्त कर ली वीरगति,
अंग्रेजों को तब भी नहीं आई सुमति,
धीरे–धीरे पूरे वतन में फेल गई जब कांति,
अंतिम चरण में जाकर तब भाग गए ब्रिटानी।

भारत माँ को गुलामी की बेड़ियों से मिल गई मुक्ति
हिन्दुस्तानियों को भी तब जाकर मिली शांति
व्यर्थ नहीं गया शहीदों का यह संघर्षपूर्ण बलिदान
इसलिए तो करते हैं सब नमन उनको बारंबार।



Scanned with AnyScanner

राम सिंगार चौहान
सहायक लेखा अधिकारी



जानता हूँ कि अब हम से प्यार ना रहा।
अब तुझे भी मेरा इंतज़ार ना रहा।

रूह बनके कभी दिल में रहते थे जो
रूह को जिस्म पे एतबार ना रहा

कौन अपना पराया ख़बर ही नहीं
अब किसी से मेरा सरोकार ना रहा ।

जीते मरते थे, जिनकी, खुशी में कभी
अब उसी पर मेरा, अख़्तियार ना रहा ।

फूल बन के यहाँ लाख कलियाँ खिलें,
दिल किसी के लिए, बेकरार ना रहा ।

मैं भटकता फिरा इस शहर में तेरे
कोई मिलने का पल भी बेज़ार ना रहा।

हमने देखे है शाकी शहर में कई
अब किसी भी नज़र में ख़ुमार ना रहा।



Scanned with AnyScanner

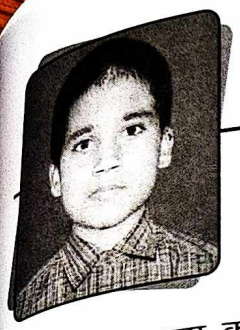

आयुश शिवम्
द्वारा- श्री सुरेन्द्र लाल दास
वरीय लेखाधिकारी

# सफलता की चाबी

रमेश नाम का एक गरीब लड़का बिहार के एक गाँव में रहता था। उसके माता-पिता काफी गरीब थे, जिस कारण वह अच्छे विद्यालय में नहीं पढ़ सका। लेकिन वह पढ़ने में काफी तेजा था, जिस कारण से उसे सरकार की सहायता मिली। उस स्कॉलरशिप के कारण वह डी0ए0वी0 जैसे बड़े स्कूल में पढ़ सका। उसे दसवीं की परीक्षा में अपना हुनर दिखाने का मौका मिला। वह उस परीक्षा में 99 प्रतिशत अंक के साथ पूरे भारत में चौथे स्थान पर आया। जिसके बाद चारों ओर उसकी चर्चा होनी लगी। उसे आगे की पढ़ाई के लिए कई संस्थानों से मदद मिली। उसने दिल्ली के एक स्कूल में 12वीं की परीक्षा दी, जिसमें उसे 92 प्रतिशत अंक आए। उसके बाद उसने दिल्ली के ही एक कॉलेज से स्नाातक की पढ़ाई पूरी की। फिर वह यू0पी0एस0सी0 की परीक्षा में बैठा, जिसमें वह उच्च स्थान पर आया और आई0ए0एस0 के इंटरव्यू के लिए चुन लिया गया। उसके इंटरव्यू लेने वाले भी उसकी बुद्धिमानी से दंग रह गए। वह इंटरव्यू पास करके आई0ए0एस0 बन गया। जब उनसे पूछा गया कि उनकी सफलता की चाबी क्या है तो उन्होंने कहा "मैं आज जो भी हूँ, अपनी मेहनत के कारण हूँ। मैं हमेशा इस बात को ध्यान में रखता कि यदि कोई रास्ता कठिन है तो इसका यह अर्थ नहीं कि मैं चलना ही छोड़ दूँ और मेहनत करके मैं इस कठिन रास्ते को पार कर सकता हूँ। मेरी नियमित कठिन परिश्रम, नए नए क्षेत्रों के अध्ययन व ध्यान देकर उच्च लक्ष्य निर्धारित कर, उसका पीछा करना मेरी सफलता की कसौटी बनी।"

किसी ने सच ही कहा है "यदि कड़ी मेहनत आपका हथियार है, तो सफलता आपकी गुलाम हो जाएगी।"



Scanned with AnyScanner

प्रियंका कुमारी
द्वारा चंदन कुमार
लेखाकार

## माँ की ममता

वो एक औरत माँ हैं
जिसके ममता की छांव में
बसता सारा जहाँ हैं।
वो लाचार कहीं होती है
फिर भी हार नहीं रोती है
अपने जिगर के टुकड़े को
प्यारे, सुन्दर से मुखरे को
अपने आँचल में ढँक लेती
सारे दुःख पल में हर लेती
भले ही वो होती है अनपढ़
ख़ामोशी को वो लेती है पढ़
बच्चा क्या कहता है रो कर
वो समझे खुद बच्चा हो कर
छः रोटी को चार बताती
ऐसे भी माँ प्यार जताती
खुद भूखे भी रह जाती
पर बच्चे को अन्न खिलाती
सर्द की ठंडी रात हो



Scanned with AnyScanner

सर्द की ठंडी रात हो

या मौसम बरसात हो

या गर्मी झुलसाती है

माँ सब यूँ सह जाती है

है अनमोल माँ की ममता

व्यक्त करूँ न ऐसी क्षमता

शब्द अधूरे रह जायेंगे

भावों को न कह पाएंगे

तेरा आशीष सदा पाऊं मैं

अगले जन्म भी तेरे घर आऊं मैं।

मात की ममता, पिता की समता

देती मुझको ऐसी क्षमता

सब मिल जाये जग में मुझको

जैसे हूँ मैं योगी रमता

Scanned with AnyScanner

Scanned with AnyScanner